RNI क 50309/85 डाक पंजियन क्र. म. प्र. /भोपाल/281/2015-17 प्रकाशन तिथि 25 अगस्त 2015

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका सितम्बर 2015

मूल्य ₹ 50

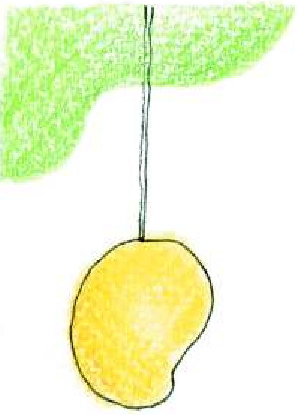

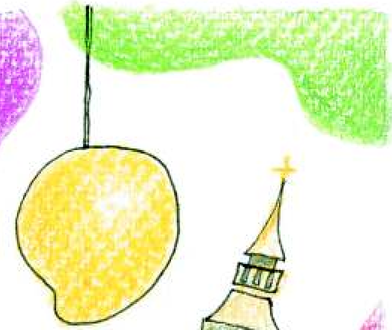

आम छीलो, छीलो छालो

कच्चा धागा, रेस लगालो
आम छीलो, छीलो छालो
कच्चा धागा, रेस लगालो
दस पत्ते तोड़े, पांच पान जोड़े
एक पत्ता कच्चा, हिरन का बच्चा
हिरन गया पानी में, पकड़ा उसकी नानी ने
नानी गई लन्दन, पकड़ी उसकी गरदन
नानी को मनायेंगे, रसमलाई खायेंगे
रसमलाई कच्ची, हमने खाई मच्छी
मच्छी में कांटा, हमने मारा चांटा
चांटा लगा जोर से, हमने खाए समोसे
समोसे बडे ठंडे, हमने खाए डंडे
आन्टी जी नमस्ते, छोले खाओ सस्ते
पानी पियो ठंडा, सिर पे मारो डंडा
सिर से निकला खून, करो टेलीफोन
टेलीफोन में तार नहीं, हम तुम्हारे यार नहीं
यार गया दिल्ली, वहां से लाया बिल्ली
बिल्ली ने मारा पंजा, यार हो गया गंजा

- 'अनाम' रचयिता -

चित्र : तापोशी घोषाल

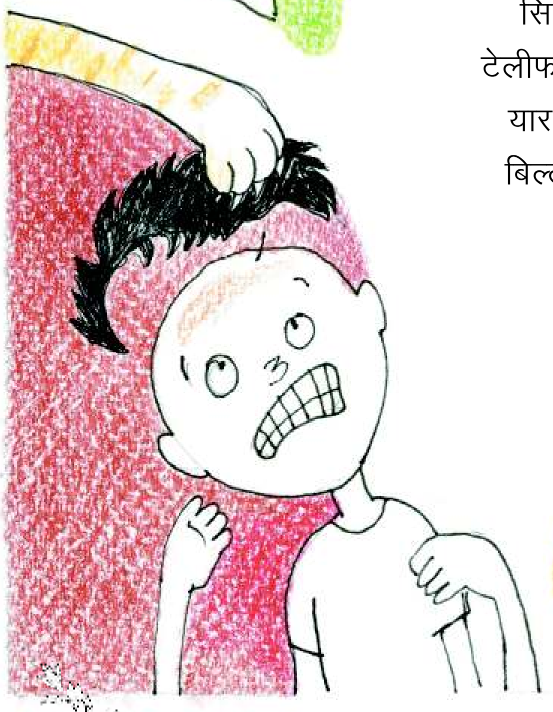

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

अंक 348 सितम्बर 2015

इस अंक में

2 आम छीलो, छीलो छालो - स्वामिनी/सौम्या मैनन

4 पानियों की फसलें - प्रभात

6 बिल्ली बनी स्टेशनमास्टर - अरविन्द गुप्ते

8 कथा कही एक प्राचीन मूर्ति ने! - अशोक भौमिक

10 जादू के सपने या सपनों का जादू? - मोहित कटारिया

14 बूढ़ी ऊनी नानी -पद्मजा गुनगुन

16 मैना - सत्यजित रॉय

20 सादे पानी की अनोखी खूबियाँ - सुशील जोशी

22 पता नहीं कौन! - चन्द्रकान्त देवताले

23 बोली रंगोली

27 पानियों की उठाधरी - अंकुश गुप्ता

28 चमकीली मछली - इतालवियो कैल्विनो

30 छुट्टा सांडोबा हमारा लाडोबा - दिलीप चिंचालकर

32 मगरमच्छों का बसेरा - जसबीर भुल्लर

35 माथापच्ची

36 अपने शिक्षकों से कुछ बातें - खुशी

37 कहानी कैसे बनती है - स्वयं प्रकाश

38 मेरा पन्ना

40 भूरी काली चिड़िया - उमेश चौहान

42 पहली बौछार के फूल - आमोद कारखानिस

45 चार कौए उर्फ चार हौए - भवानीप्रसाद मिश्र

46 राजा ने आदेश दिया - देवी प्रसाद मिश्र

47 फनी पाठशाला - इरफान

48 चित्रपहेली

बन्दूक

अगर कहीं मिलती बन्दूक
उसको मैं करता दो टूक
नली निकाल बना पिचकारी
रंग देता यह दुनिया सारी

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(15 सितम्बर 1927 - 24 सितम्बर 1983)

दिलीप, पहली, ईश्वर नगर भोपाल

आवरण चित्र
गार्गी शिंगणे (आठ साल, भोपाल) ने इसे स्टारी नाइट नाम दिया है।

हाशिए के चित्र
इन्टरनेट से

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
सोमेश दास

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव

विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के वित्तीय सहयोग से विकसित

एक प्रति :	50.00
वार्षिक :	500.00
तीन साल :	1350.00
आजीवन :	6000.00

सभी डाक खर्च हम देंगे।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
IFSC कोड - SBIN0003867
कृप्या खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोनः (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108, e mail - chakmak@eklavya.in, e mail - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

पानियों की फसलें

प्रभात

चित्र: सोनाली बिस्वास

चलीं पेड़ों में तेज़ हवाएँ
घिर आईं घनघोर घटाएँ
भाग रहे मैदान में बछड़े
आँधी देख गायें रम्भाएँ।
हैं बन्दर पेड़ों के घोड़े
ये घोड़े बिन ताँगे दौड़े
रे हवाओं के खेतों में
पानियों की फसलें हैं।

बादल उड़ती-फिरती झीलें
ये झीलें पानी की चीलें
पानी की चीलें पीपल में
खोलें पंख उड़ें जंगल में
झरने कूद रहे हिरनों से
हिरने कूद रहे झरनों से
रे हवाओं के खेतों में
पानियों की फसलें हैं।

ठण्डी टीप घनी एक बदली
बर्फीली आँखें जल-बिल्ली
बिखराए ओलों की कलियाँ
छितराए बारिश की फलियाँ
बूँदों के धानों से भर गए
घनी अमरइया नावें नदियाँ
रे हवाओं के खेतों में
पानियों की फसलें हैं।

बिल्ली बनी स्टेशन मास्टर

अरविन्द गुप्ते

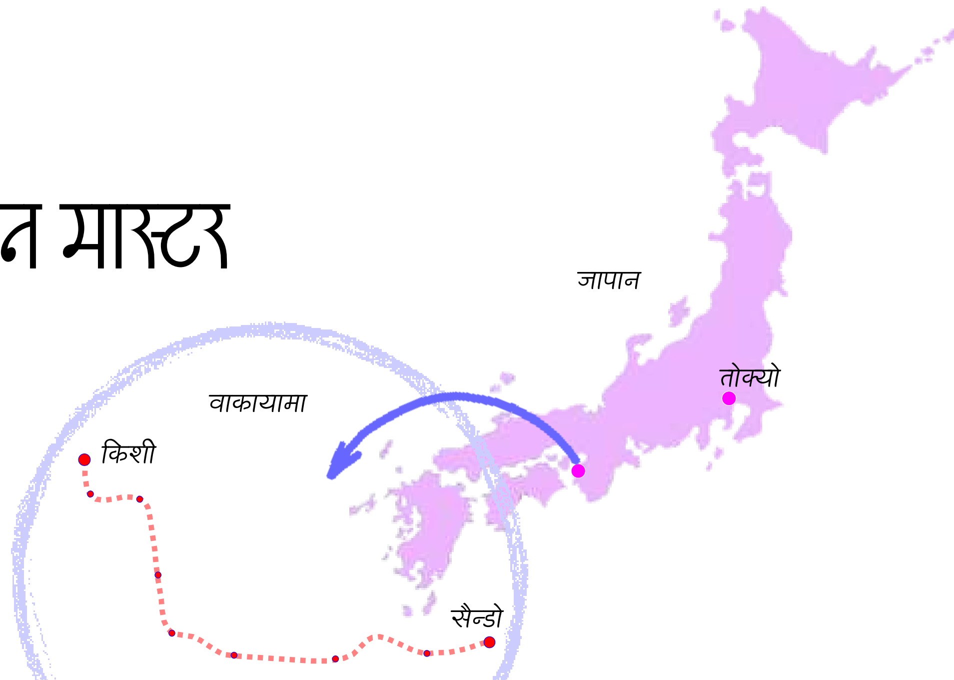

जापान के दो शहरों – सैन्डो और वाकायामा – के बीच रेल लाइन 1916 में बिछाई गई थी। 14 किलोमीटर लम्बी इस लाइन पर 14 स्टेशन पड़ते हैं। वाकायामा शहर के स्टेशन का नाम किशी है। मुख्य लाइन न होने की वजह से इस पर सफर करनेवालों की संख्या बहुत ज़्यादा नहीं होती है जिससे यह घाटे में चल रही है। खर्च में कटौती करने के लिए रेलवे कम्पनी ने (इस लाइन पर निजी कम्पनी द्वारा रेल चलाई जाती है) कर्मचारियों की संख्या में कटौती करने का तरीका अपनाया। किशी स्टेशन से अन्तिम कर्मचारी को 2006 में हटा दिया गया। वैसे भी यहाँ ज़्यादा कर्मचारियों की ज़रूरत इसलिए नहीं होती क्योंकि यात्री मशीन में पैसे डालकर टिकिट लेते हैं और ट्रेन आने पर उसमें सवार हो जाते हैं। ट्रेन में भी ड्राइवर के अलावा और कोई कर्मचारी नहीं होता।

यात्रियों की घटती संख्या से चिन्तित कम्पनी ने 2007 में टामा नाम की एक बिल्ली को किशी का स्टेशन मास्टर बनाया। टामा को बाकायदा स्टेशन मास्टर की टोपी और बिल्ला दिया गया और खाली पड़े टिकिट घर में उसका ऑफिस बनाया गया।

टामा और निटामा

कम्पनी की मानद अध्यक्षा टामा

टामा ने अपने काम को बहुत गम्भीरता से लिया। वह स्टेशन के चक्कर लगाकर सारी व्यवस्थाओं का जायज़ा लेती रही। निटामा नामक एक बिल्ली को टामा का सहायक नियुक्त किया गया और वह टामा के काम में पंजा बँटाने लगी। इसका नतीजा यह हुआ कि इस लाइन पर सफर करनेवाले यात्रियों की संख्या बढ़ गई। 2005 में जहाँ 19 लाख यात्रियों ने इस लाइन पर यात्रा की थी वहीं 2014 में यह संख्या 22 लाख तक पहुँच गई। यात्रियों के लिए टामा एक बड़ा आकर्षण था। किशी स्टेशन पर एक दुकान खुल गई जिसमें टामा की फोटो के अलावा टामा के चित्रवाले मग, पेंसिलें, कॉपियाँ, स्केल आदि भी मिलते हैं। स्टेशन की कैन्टीन की कुर्सियों, वहाँ मिलनेवाली केक आदि सब को बिल्ली का आकार दिया गया है। यहाँ तक कि स्टेशन की इमारत को भी बिल्ली का आकार दिया गया है। इस सबके चलते यहाँ के कारोबार में भी वृद्धि हुई है।

अपना काम इतनी मेहनत और ईमानदारी से करने के कारण 2013 में टामा को रेलवे कम्पनी का मानद अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 22 जून 2015 को दिल का दौरा पड़ने से टामा की मृत्यु हो गई। वो तब 16 साल की थी। बिल्लियों में इतनी उम्र मनुष्यों के 80 साल के बराबर होती है।

कथा कही एक प्राचीन मूर्ति ने!

अशोक भौमिक

दुनियाभर में मूर्तिकला का एक लम्बा इतिहास रहा है। हमारे देश में भी मूर्तिकला की अत्यन्त विकसित परम्परा रही है। इन मूर्तिकारों की रचनाशीलता और साहस चमत्कृत कर जाता है। भारतीय मूर्तिकला का विकास काफी हद तक धार्मिक प्रतिमाओं की रचना के साथ हुआ है, लेकिन मूर्तिकारों ने धर्म से हटकर प्रयोग करने का भी साहस दिखाया है।

इस का एक उदाहरण है दसवीं सदी में बनी परमार युगीन गणेश मूर्ति (देखें चित्र)!

मूर्ति निर्माण में दो तरह की तकनीकों का सहारा लिया जाता है। एक जोड़ना (addition) और दूसरा, घटाना (subtraction)। जहाँ मिट्टी, प्लास्टर जैसी निर्माण सामग्री को एक तह के ऊपर दूसरी तह को चढ़ाकर मूर्ति बनाई जाती है, उसे जोड़ना (addition) कहते हैं। और जब पत्थर या लकड़ी के कुन्दे को तराशकर मूर्ति बनाई जाती है, तो उस तकनीक को घटाना (subtraction) कहते हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि पत्थर या लकड़ी को तराशने में यदि कोई गलती हो जाए तो उसे सुधारने की अमूमन कोई गुँजाइश नहीं होती। पर मिट्टी-प्लास्टर से मूर्ति बनाने में हुई गलती को सुधारा जा सकता है। यानी मूर्तिकला में अगर अपनी गलती सुधारनी हो तो "घटाना", "जोड़ने" से कहीं ज़्यादा मुश्किल ही नहीं है बल्कि अधिकाँश मौकों में असम्भव-सा भी होता है।

मध्यप्रदेश के उज्जैन स्थित विक्रम विश्वविद्यालय के संग्रहालय में दसवीं सदी की इस गणेश की मूर्ति को शिल्प की दृष्टि से परमार युग का माना जाता है। गौर से देखें तो यह अपने में छिपे कुछ दिलचस्प तथ्यों को एक-एक कर हमारे सामने खोलती है।

गणेश की आम मूर्तियों से यह काफी भिन्न है। सबसे पहले हमारी नज़र इसकी अस्वाभाविक रूप से छोटी सूँड पर रुकती है (चित्र अ)। दरअसल,

चित्र अ

बनाते समय या बाद में किसी कारण से इसकी सूँड टूट गई थी। जब इसे बनाया गया था तो इसकी सूँड का एक अंश मूर्ति के पेट से जुड़ा हुआ था। चित्र ब में सूँड के टूटने से, पेट पर बने अर्ध चन्द्रकार चिन्ह को न केवल साफ देखा जा सकता है, बल्कि सूँड का आकार और उसके मुड़ने की दिशा का भी पता चलता है।

चित्र ब

टूटने के बाद सूँड के बाकी बचे हिस्से (जो शायद पूरे सूँड के एक चौथाई हिस्से से भी कम रह गया होगा) को मूर्तिकार ने बहुत खूबसूरती से तराशकर मोड़ दिया है। इस कोशिश में उसे सूँड के आकार को कुछ नुकीला करना पड़ा।

मूर्ति के दोनों दाँतों को, गले के बारह दानों या मोतियों के हार को, हाथ के ऊपरी हिस्से के कंगनों को, गणेश के पेट और कन्धों को जिस सफाई के साथ तराशा गया है, वह सफाई मूर्ति के दूसरे हिस्सों में गैर हाज़िर है।

इस मूर्ति का यह एक बेहद महत्वपूर्ण पक्ष है। हो सकता है कि मूर्ति की सूँड टूटने के बाद किसी दूसरे मूर्तिकार ने इसे दुबारा बनाया हो! और जो पहलेवाले मूर्तिकार से कम हुनरमन्द रहा होगा। पर दूसरा मूर्तिकार एक बेहद रचनाशील और साहसिक कलाकार था, क्योंकि उसने -

1. मूर्ति के बाकी बचे सूँड के हिस्से को बखूबी तराशकर एक नया रूप दिया था।

2. कोहनी तक की अपनी स्वाभाविक बनावट के चलते यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि मूर्ति के दोनों हाथों का तालमेल दूसरे हिस्सों के साथ बनाए रखने के लिए हाथों को कोहनियों तक सीमित कर कोहनियों से ही हथेलियाँ बना दी गई हैं (चित्र स)।

चित्र स

3. मूर्ति के दोनों हाथ टूट गए थे या फिर उसके विभिन्न अंगों में समानता लाने के लिए उन्हें तोड़कर दुबारा बनाया गया है, इसके बारे में अनुमान लगाना बेमानी है। यहाँ सबसे गौरतलब है मूर्तिकार का कोहनी के हिस्से को तराशकर हथेलियों का रूप देना!

4. इसी समानता को हासिल करने के उद्देश्य से सूँड और हाथों के साथ-साथ

चित्र द

मूर्तिकार ने कानों और पैरों (चित्र द) को भी दुबारा बनाया। और इस तरह मूल मूर्ति को एक एकदम नया रूप दिया (चित्र इ)। क्योंकि यह शायद अस्वाभाविक ही लगता अगर इतने छोटे सूँडवाले गणेश के हाथ-पैर लम्बे (या समूचे) होते।

5. संरचना की दृष्टि से इस मूर्ति को दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है। एक हिस्से में मूर्ति के उन अंगों (सीना, पेट और सर) और अलंकारों (माला और बाजूबन्द) को रख सकते हैं जहाँ स्वाभाविक और यथार्थवादी संरचना स्पष्ट दिखाई दे रही है। वहीं मूर्ति के अन्य अंगों (कान, सूँड, हाथों और पैरों) में एक दूसरे प्रकार की संरचना दिखती है। वहाँ सभी के आकारों को छोटा किया गया है जो स्वाभाविक नहीं लगते। इस मूर्ति का महत्व इसीलिए है क्योंकि यहाँ दो विभिन्न प्रकार की संरचनाओं को एक ही साथ एक ही मूर्ति में उपस्थित पाते हैं पर बावजूद इसके इन दोनों के बीच सामंजस्य (harmony) की कमी नहीं खटकती।

चित्र इ

6. हम यहाँ यह भूल जाएँ कि यह मूर्ति गणेश की है या उन्हें जो गणेश की मूर्ति के बारे में कुछ नहीं जानते, यह मूर्ति कहीं से भी टूटी या अधूरी या अस्वाभाविक नहीं लगेगी। बल्कि अपने आप में हम इसे एक नायाब कृति के रूप में ही पाएँगे। इसमें एक मूर्तिकार का कुछ नया रचने का साहस दिखता है। साथ ही यह उस समाज को भी महान बनाता है जिसकी कला चेतना इतनी विकसित थी कि इस रूप में भी मूर्ति को ग्रहण करने में उसे कोई मुश्किल नहीं हुई। यह उस समाज द्वारा मूर्तिकार के साहसिक प्रयोग की स्वीकृति भी है।

(गणेश मूर्ति की तुम भी कुछ पड़ताल कर सको इस पर एक बॉक्स पेज 21 पर)

जब भी कोई पूछता है तो छोटा भाई बताता है, मेरा नाम "कौवे का छोटा अण्डा" और बड़े भाई का नाम "कौवे का बड़ा अण्डा" है।

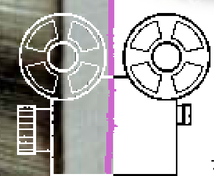

मोहित कटारिया

जादू के सपने या सपनों का जादू?

अभी हाल में एक तमिल फिल्म रिलीज़ हुई है – *काक मुत्तई* (कौवे का अण्डा)। मेरे सभी दोस्तों ने इस फिल्म को ज़रूर देखने की सिफारिश की। इसे दो राष्ट्रीय फिल्म पुरुस्कार भी मिले हैं सो मैं कोशिश करके इसे देखने के लिए गया। कोशिश इसलिए करनी पड़ी कि मुझे तमिल का क, ख, ग, तक नहीं आता है। लेकिन संवादों का अँग्रेज़ी में अनुवाद होने के कारण मुझे खास दिक्कत महसूस नहीं हुई।

फिल्म में दो भाई हैं – एक लगभग 6-7 साल का और दूसरा कोई 9-10 साल का। वे अपनी झुग्गी से खाना खाकर खेलने निकलते हैं। उनकी जेबों में एक-एक मुट्ठी पके हुए चावल भरे हैं। मैदान में एक ऊँचा पेड़ है। छोटा भाई उस पर रहनेवाले कौवों को भरमाकर चावल खिलाता है। इतने में बड़ा भाई पेड़ पर चढ़कर कौवे के घौंसले से अण्डे चुरा ले आता है। एक अपने लिए, एक छोटे भाई के लिए। एक अण्डा छोड़ देता है, कौवों के लिए। दोनों भाई मज़े से एक-एक अण्डा फोड़कर पी लेते हैं और खेलने के लिए आगे बढ़ जाते हैं। जानते हो इन दोनों के नाम क्या हैं? जब भी कोई पूछता है तो छोटा भाई बताता है, मेरा नाम "कौवे का छोटा अण्डा" और बड़े भाई का नाम "कौवे का बड़ा अण्डा" है। उनके सभी दोस्त उन्हें इसी नाम से बुलाते हैं। हालाँकि ये नाम उनकी माँ को बिलकुल पसन्द नहीं हैं।

कहानी आगे बढ़ती है – उन बच्चों का खेल का मैदान किसी ने खरीद लिया है और उस पेड़ को काटकर वहाँ कोई नई इमारत बनाई जानेवाली है। जब तक इमारत बनती है, तब तक हमें पता चलता है कि दोनों भाई (यानी कौवे के दोनों अण्डे) अपनी माँ और दादी के साथ रहते हैं। और उन के पिताजी जेल में हैं (इसका कारण अन्त तक स्पष्ट नहीं होता है।)। वे रेल की पटरियों के पास से कोयला चुनने का काम करते हैं ताकि अपनी माँ की मदद कर सकें। यह कोयला वहाँ से गुज़रती ट्रेनों से गिरता है। ट्रेन के चले जाने के बाद वे उसे इकट्ठा कर के तीन रुपए प्रति किलो के भाव से बेचते हैं। इसी दौरान उन का एक दोस्त बनता है, जो पास की एक बिल्डिंग में रहता है। वो

बड़ा भाई हाथ में एक डण्डा लिए इस कोशिश में है कि ट्रेन के दरवाज़े पर अपने मोबाइल को हाथ में लेकर बैठे व्यक्ति को डण्डा मारकर उसका मोबाइल गिरा दे।

उनके कई सवालों का जवाब देता है, जो उनके लिए कहीं और से जानना नामुमकिन होता। हालाँकि वो जवाब दोनों भाइयों के परिवेश से मेल नहीं खाते थे, लेकिन उन दोनों के लिए बहुत लाज़मी थे।

उधर पता चलता है कि उनके खेल के मैदान पर बन रही इमारत दरअसल एक पिज़्ज़ा की दुकान है और उस का उद्घाटन करने के लिए उनका चहेता फिल्मी हीरो सिम्बु आ रहा है (सिम्बु असल में भी तमिल फिल्मों का एक बहुत बड़ा हीरो है)। सिम्बु फीता काटकर अन्दर आता है और पिज़्ज़ा खाना शुरू करता है। दोनों भाइयों को यह सब जादू जैसा लगता है। और इसी जादू से एक सपना निकलता है – पिज़्ज़ा खाने का सपना। उसी तरह से, जैसे सिम्बु खा रहा है। और यहीं से शुरू होती है उस सपने को पूरा करने की कोशिशें। (हो सकता है कि यह सपना तुम्हें मामूली लगे।)

इसीलिए वे अपने दोस्त से पूछते हैं कि पिज़्ज़ा खरीदा कैसे जा सकता है। वो कहता है कि तुम फोन पर अपना पता बता दो तो वो तुम्हारे घर पिज़्ज़ा लेकर आ जाएँगे। लेकिन उनके घर का कोई पक्का पता तो है नहीं! वे जानते हैं कि पिज़्ज़ा खाने के लिए उन्हें तीन सौ रुपए इकट्ठे करने हैं। इसके लिए वो तरह-तरह की कोशिशें करते हैं। पहली बार जब उनका दोस्त फ्रूट-जूस (हाँ, उसका यही नाम है) उन्हें कोयले के एक गोदाम में ले जाता है, ताकि वहाँ से कोयला ले जाकर वे बेच सकें तो बड़ा भाई उससे पूछता है कि हम चोरी तो नहीं कर रहे हैं? इस पर फ्रूट-जूस बोलता है, "नहीं, हम तो यहाँ से सिर्फ कोयला ले रहे हैं।" एक अन्य दृश्य में बड़ा भाई हाथ में एक डण्डा लिए रेल की पटरी के बिलकुल पास खड़ा है। वो कोशिश में है कि ट्रेन के दरवाज़े पर अपने मोबाइल को हाथ में लेकर बैठे व्यक्ति को डण्डा मारकर उसका मोबाइल गिरा दे ताकि उसे बेचकर पैसे इकट्ठे किए जा सकें। लेकिन ऐन वक्त पर वो अपना डण्डा नीचे कर लेता है और ट्रेन को गुज़र जाने देता है। उसे सही रास्ते से ही अपने सपनों को पूरा करना है।

वो धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं – कोयला बेच-बेचकर और इधर-उधर के छुट-पुट काम कर। एक दिन वो आता है जब उनके पास तीन सौ से ज़्यादा रुपए इकट्ठे हो जाते हैं। और वे पहुँच जाते हैं पिज़्ज़ा की दुकान पर। लेकिन वहाँ का चौकीदार जानता है कि ये झुग्गी के बच्चे हैं और उन्हें अन्दर जाने की इजाज़त नहीं है। सो वो उन्हें डाँटकर भगा देता है। वे समझ जाते हैं कि अच्छे, साफ-सुथरे कपड़े नहीं पहनने के कारण शायद उन्हें अन्दर जाने नहीं दिया। सो अब वो कपड़े

काक मुत्तई – चमकते-दमकते नए हिन्दुस्तान से पीछे छूट गए बच्चों की कथा

– वरुण ग्रोवर

नया हिन्दुस्तान बहुत जल्दी में है। लाखों-करोड़ों बच्चे इस दौड़ में पीछे छूटते जा रहे हैं। इस फिल्म के दो भाइयों की तरह। फिल्म के भाइयों का मुकाम है एक 300 रुपए का पिज़्ज़ा जिसे नए हिन्दुस्तान के नए टीवी पे आनेवाले चमकदार विज्ञापनों ने ऐसा सुन्दर दिखाया है जैसे वो कोई स्वर्ग से उतरी मिठाई हो।

झुग्गी में रहनेवाले ये दोनों भाई जब अपनी गरीबी छुपाने के लिए नए कपड़े पहनकर दुकान में घुसने की कोशिश करते हैं, तब भी बाहर खड़ा चौकीदार उन्हें अन्दर नहीं जाने देता। जबकि वह चौकीदार शायद खुद भी उन्हीं बच्चों की जैसी किसी झुग्गी में रहता होगा। पर मालिकों का डर है कि वो इन्हें अन्दर नहीं आने देता।

इंडिया अपने घरों को भारत से सुरक्षित रखने के लिए भारत को भारत से ही भिड़ा रहा है। जैसे अँग्रेज़ों के ज़माने में हिन्दुस्तानी सिपाही हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारियों पे गोली चलाते थे।

एक साथ ना जाने कितनी बातें कह जाती है यह फिल्म। टीवी विज्ञापनों और शॉपिंग मॉलवाला इंडिया, उस इंडिया के अन्दर पहुँचने के लिए उकसाया और चिढ़ाया जा रहा भारत, और अन्दर पहुँचने के बाद उस भारत की निराशा (जो मुझे सबसे मज़ेदार लगी)।

इसके अलावा बचपन की मासूमियत और समझ और शरारत और कभी-कभी बदतमीज़ी भी – एक सम्पूर्ण चित्र।

बच्चे भी उत्सुकतावश उनके पीछे हो लिए यह देखने कि दोनों भाई आज कैसे पिज़्ज़ा खाकर आनेवाले हैं!।

खरीदने के लिए पैसे इकट्ठा करना शुरू करते हैं। ये पूरी फिल्म ही समाज के दो हिस्सों – एक जिसके पास ज़रूरत से ज़्यादा पैसे हैं और दूसरा, जो बमुश्किल रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी कर रहा है – को दिखाती है।

लेकिन कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। अभी तो वो जादू के एक सपने के पीछे भाग रहे हैं। जैसे-तैसे अच्छे कपड़ों का इन्तज़ाम हुआ तो वे पिज़्ज़ा की दुकान में जा पहुँचे। इस बार पूरे आत्मविश्वास के साथ थे सो अपने दोस्तों को कह कर गए कि देखना हम आज कैसे पिज़्ज़ा खाकर आनेवाले हैं! बच्चे भी उत्सुकतावश उनके पीछे हो लिए। पर जैसे ही दोनों भाई वहाँ पहुँचते हैं, चौकीदार उन्हें डाँटने लगता है। और भीतर से मैनेजर आकर बड़े भाई को एक थप्पड़ भी जड़ देता है। कहानी यहाँ एक नया मोड़ लेती है। उनके दोस्तों में से एक इस थप्पड़ की वीडियो रिकॉर्डिंग अपने मोबाइल में कर लेता है।

दोनों भाइयों के सपनों का जादू दिखाने में यह वीडियो बहुत अहम भूमिका निभाता है। सारी बात तो तुम्हें यह फिल्म देखकर ही पता चलेगी।

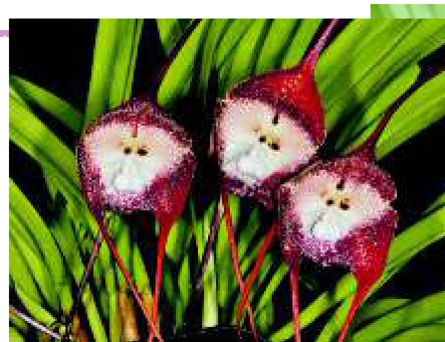

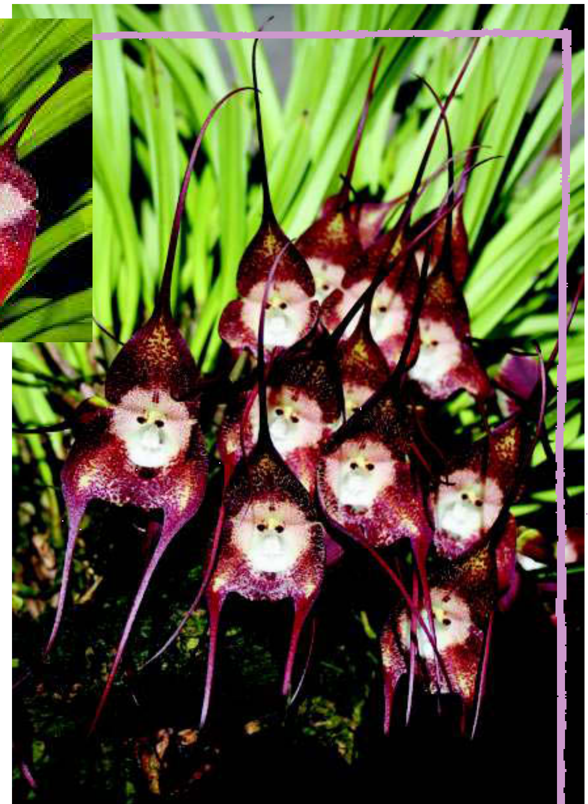

बन्दरीला फूल सन्तरीली खुशबू

ये हँसते बन्दर जैसे मुँहवाला फूल बहुत ही अनूठा है। इसका वैज्ञानिक नाम *Dracula simia* है। Dracula शायद इसलिए कि इसकी अँखुड़ियों से निकली दो लम्बी लटकनें एक "मशहूर भूत" ड्रैकुला के दाँतों की तरह लगती हैं और simia लातिन भाषा में बन्दर होता है। यह फूल इक्वाडोर, कोलम्बिया और पेरू के पहाड़ी इलाकों (1000-2000 मीटर समुद्र तल से ऊँचाई पर) में मिलता है। और किसी भी मौसम में उग आता है। वैसे छायादार, ठण्डा मौसम इसे खास सुहाता है।

एक खासियत इसकी खुशबू भी हैं जो सन्तरे जैसी है। तुमने कहीं केले जैसी खुशबू की उम्मीद तो नहीं कर ली थी ना!

जादू के सपने **या सपनों का जादू?**

इस फिल्म की कुछ बातें गुदगुदाती भी हैं और सोचने के लिए मजबूर भी करती हैं। मसलन, काले अण्डे कौवे के ही हों यह ज़रूरी तो नहीं है ना? कोयल भी तो अपने अण्डे कौवे के घौंसले में छिपाकर रखती है, लेकिन यह बात यहाँ उतना महत्व नहीं रखती है जितनी बच्चों की दादी द्वारा कौवे के अण्डों को इस तरह चुराकर खाने को सही ठहराया जाना। ऐसा इसलिए क्योंकि उनका परिवार मुर्गी के अण्डे खरीदकर खा नहीं सकता और बच्चों को इस उम्र में ताकत की ज़रूरत होती है। एक और बात, अमूमन कोयल अपनी मीठी आवाज़ की वजह से अच्छाई का प्रतीक है और कौआ अपनी कर्कश आवाज़ से बुराई का। फिल्म के नाम में शायद इसी तरफ इशारा है।

एक और मज़ेदार बात, सोचो कि तुम किसी नए दोस्त से उसका नाम पूछते हो। और अगर वो जवाब दे "फ्रूट जूस", तो तुम्हें कैसा लगेगा?

उम्मीद है, जब भी तुम्हें मौका मिलेगा, तुम भी इस पिज़्ज़ा को चखोगे और जानोगे कि कुछ आम-सी चीज़ें भी कितने लोगों को बेहद मेहनत से मिल पाती हैं।

अगस्त की चित्र पहेली हल

पो	ख	र		चा	बी		रा	
ट		स्सी			क	ट	ह	ल
ली	ची		ब	न्द	र			ह
	त	स्वी	र			गो	ब	र
गो	ल		सा	गौ	न		गु	
दा		मो	ती		ग	म	ला	
म	ल	बा		चा		फ		मो
		इ	म	ली		ल	प	ट
च	प्प	ल		स	न्तू	र		र

पद्मजा गुनगुन

बूढ़ी ऊनी नानी

बूढ़ी नानी पहाड़ की चोटी पर बैठती हैं। खूब सारे रंग-बिरंगे ऊन के गोले लेकर। नानी खुद भी छोटा-सा ऊन का गोला लगती हैं। बारिश के मौसम में स्वेटर, मफलर और मोज़े बुनना शुरू करती हैं ताकि सर्दियाँ आने तक हमारे लिए गरम कपड़े तैयार हो जाएँ!

बारिश होती है तो नानी को ज़ोर की गुदगुदी होती है। वो बड़ा ठहाका लगाकर हँसती हैं और एक ऊन का गोला पहाड़ की चोटी से लुढ़क जाता है। रोज़ बारिश होती है और रोज़ एक ऊन का गोला लुढ़क जाता है। नानी स्वेटर का जो रंग सोचती हैं वो बुन नहीं पाती हैं। नीला सोचती हैं पर वो लुढ़क जाता है तो लाल बुनती हैं। लाल सोचती हैं तो हरा बुनती हैं। कर कुछ नहीं सकतीं क्योंकि ना तो वो बारिश रोक पाती हैं ना हँसी रोक पाती हैं। बारिश को हँसी अच्छी लगती है और हँसी को बारिश।

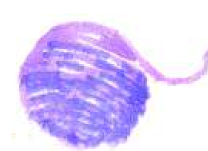

चित्रः दिलीप चिंचालकर

लुढ़के हुए गोलों को बहुत मज़ा आता है। उनका रंग ऐसा कमाल का होता है कि जिससे भी वो टकराते हैं उस पर अपना रंग फैला देते हैं। लाल गोला किसी पेड़ से टकराकर उस पर लाल फूल टाँक देता है। पीला गोला तितली से टकराकर उसे पीले पंख देता है। हरे गोले की ऊन अगर खुल जाए तो घास का मैदान उग आता है।

ये सब तो चलो ठीक है कई बार जब गोले बदमाशी का मन बना लें तो उस दिन सब जादू-सा लगता है। मैंने अपनी आसमानी पतंग उड़ाई और मान लो कि वो कट गई। तुम्हारी छत पर आकर गिरी गुलाबी पतंग। हवा में तैरती हुई वो गुलाबी गोले से जो टकरा गई थी!

तुम घर से काला छाता लेकर निकले, दोस्त के घर पहुँचे तो छाता रंग-बिरंगा हो गया। कई रंगों के ऊन के गोले रास्ते में छाते से टकरा गए और तुम्हें लगा कि बूँदें हैं।

बॉल कैच करानी हो तब तो और भी मज़ा है। पीली बॉल फेंकी तो कैच करनेवाले के हाथ बॉल तो आई नहीं

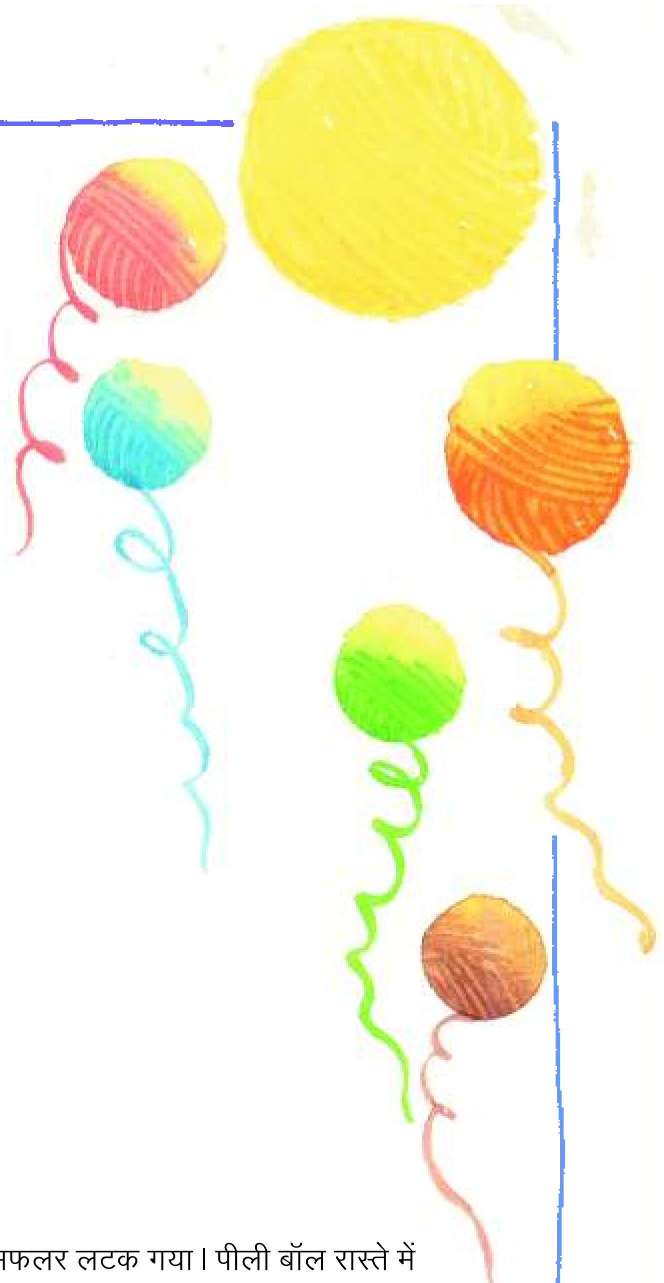

गले में बैंगनी मफलर लटक गया। पीली बॉल रास्ते में टकराई ही नहीं, उसकी बैंगनी गोले से बदली भी हो गई!

किसी दिन चाँद लाल गोले से टकरा जाए तो फिर! नीला और हरा तो वो फिर भी चला लेता, लेकिन लाल हो जाने पर शर्म के मारे घर से ही नहीं निकलता!

बारिश से सब धुल जाता है और फिर नानी के ऊन के गोले सब कुछ रंग देते हैं। बारिश का मौसम यूँ ही थोड़े इतना रंग-बिरंगा होता है!

शाम होते-होते सारे गोले सूरज के पास दौड़ लगाते हैं। सूरज उन्हें खूब सारे गरमागरम पकौड़े खिलाता है। किसी शाम सूरज ढलते-ढलते खूब सारे रंग देखो तो समझ जाना कि आज नानी खूब हँसी हैं!

मैना

सत्यजित रॉय

निताई बाबू की बड़ी इच्छा थी कि एक मैना खरीदी जाए। उनके मित्र शशांक सेन के घर एक मैना थी। एक भी बंगाली शब्द ऐसा नहीं था जो वह मैना बोल न पाती हो! मैना की बोली सुनने के लिए निताई बाबू महीने में दो-तीन बार तो शशांक बाबू के घर चले ही जाते थे। उस दिन भी ऐसा ही हुआ कि जैसे ही निताई बाबू शशांक बाबू के घर में घुसे, मैना बोली, "आइए! बैठिए!!"

एड्ड दम आदमियों जैसी आवाज़ – थोड़ी भारी – जैसे गला बैठ गया हो। चार साल से शशांक बाबू मैना को बोलना सिखा रहे थे। उनके साथ उनकी पत्नी और बच्चे भी। इसलिए मैना के खज़ाने में बहुत सारे शब्द जमा हो गए थे। निताई बाबू अत्यन्त मुग्ध होकर मैना का बोलना सुनते थे और सोचते थे – काश! मेरे पास भी ऐसा एक पक्षी होता तो मेरी शामें इस कदर उदास नहीं होतीं। शशांक बाबू ने निताई बाबू को बता रखा था कि मैना कहाँ से खरीदी जा सकती हैं। "न्यू मार्किट में पक्षियोंवाला जो हिस्सा है न, वहाँ जाकर किसी से भी पूछ लेना कि लतीफ की दुकान कहाँ है। मैंने यह मैना लतीफ की दुकान से ही खरीदी थी।"

निताई बाबू ने शादी नहीं की थी। वे भवानीपुर के एक फ्लैट में रहते थे। ऑफिस टाइम में बाज़ार जाना सम्भव नहीं था। ऑफिस से लौटने के बाद भी बाज़ार जाना सम्भव नहीं था, क्योंकि तब तक दुकानें बन्द हो जाती थीं इसलिए एक दिन जब गुडफ्राइडे की छुट्टी थी, सुबह दस बजे निताई बाबू बाज़ार गए। पक्षियोंवाला हिस्सा उन्हें मालूम था। वहाँ वे लतीफ की दुकान के बारे में पता कर ही रहे थे कि एक बुज़ुर्ग दुकानदार आया और बोला, "क्या साहब! लतीफ से क्या काम है? आपको पक्षी खरीदना है न! तो मेरी दुकान में आइए ना! मेरे पास बहुत सारे पक्षी हैं – एक से बढ़कर एक!"

दुकान वाकई बहुत बड़ी थी और पक्षी भी बहुत सारे थे। उनका कलरव चालू था।

"कैसा पक्षी चाहिए आपको?" दुकानदार ने पूछा।

"मैना।"

"कितनी चाहिए? यह देखिए मैना का पिंजरा। सब मैना ही मैना!"

"बोलती हैं न?"

"मैना हैं तो बोलेंगी ही! जैसा सिखाएँगे वैसा बोलेगी। बोलने वाले पक्षियों में मैना एकदम टॉप पर होती है। मेरे पास दो तरह की मैना हैं – नेपाली और आसामी।"

"दोनों में क्या फर्क है?"

"आसामी मैना महँगी होती है, क्योंकि उसकी आवाज़ एकदम साफ होती है।"

निताई बाबू ने फैसला किया कि वे आसामी मैना ही खरीदेंगे।

"मेरा नाम याद रखना साहब। मणिलाल कर्मकार। मेरी दुकान 56 साल पुरानी है। मेरे दादाजी ने शुरू की थी।"

"मैना पिंजरे सहित मिलेगी न?"

"ज़रूर। लेकिन पिंजरे की कीमत अलग लगेगी। आप पसन्द तो कीजिए। ये देखिए – ये आसामी है और ये नेपाली।"

निताई बाबू ने और अधिक देर किए बिना एक आसामी मैना पसन्द कर ली। थोड़ी-बहुत खींचातानी के बाद तीन सौ रुपए में सौदा पक्का हो गया। तीन सौ में मैना और पचास रुपए का पिंजरा। मैना लेकर एक रिक्शे से निताई बाबू घर लौटे।

आसामी मैना महँगी होती है, क्योंकि उसकी आवाज़ साफ होती है।

छोटा फ्लैट। दो कमरे और एक बरामदा। एक आदमी के लिए पर्याप्त था। अपने नौकर गणेश को पिंजरा थमाकर निताई बाबू बोले, "इसे बरामदे में लटकाने का इन्तज़ाम करो।"

मैना को क्या खिलाना है, मणिलाल कर्मकार ने बता दिया था – वही निताई बाबू ने गणेश को बता दिया।

"हाँ, बोलो मैना, राधाकृष्ण!" निताई बाबू अभी नहाए-धोए भी नहीं थे। लेकिन उन्हें पक्षी की परीक्षा लेने की जल्दी थी इसलिए पिंजरे के सामने खड़े होकर बोले, "बोलो बेटा राधाकृष्ण राधाकृष्ण!" मैना ने अपनी गर्दन थोड़ी हिलाई और धीरे-से बोली, "हेलो! गुड मॉर्निंग!!"

"ये क्या!! ये तो अँग्रेज़ी बोल रही है!" निताई बाबू ने हैरानी से सोचा। अभी वे इस झटके से उभरे भी नहीं थे कि मैना बोली, "यू रास्कल! शटअप! शटअप!!"

निताई बाबू को थोड़ा बुरा लगा। मणिलाल कर्मकार से ऐसी भूल कैसे हो गई? ज़रूर ये मैना किसी अँग्रेज़ के घर रही होगी। और जिस तरह ये बोल रही है उससे तो यह भी पता चलता है कि उस अँग्रेज़ का स्वभाव कैसा रहा होगा। पचास के आसपास की कोई दुखी आत्मा! शायद कोई एंग्लोइंडियन। पता नहीं इस मैना को बंगाली आती भी है या नहीं? क्या अभी जाना चाहिए मनीलाल कर्मकार के पास और यह मैना देकर दूसरी लानी चाहिए?

सोचते-सोचते निताई बाबू को लगा कि इतनी उतावली दिखाना ठीक नहीं। कुछ दिन देखना चाहिए। यह मैना शशांक सेन की मैना से ज़्यादा साफ बोलती है। यानी यह तो तय है कि इसे बोलना आता है। यह ज़रूर है कि अँग्रेज़ी बोलती है। देखें इसे कितनी अँग्रेज़ी आती है! यानी अभी तुरन्त इसे लौटाना ज़रूरी नहीं है। और इस बेचारी को

अँग्रेज़ी और बांग्ला का अन्तर क्या मालूम! यह तो जैसा सुनती है वैसा बोलती है। आज अँग्रेज़ी बोल रही है, हो सकता है कल बंगाली बोलने लगे!

तीन दिनों में निताई बाबू को पता चल गया कि मैना के अँग्रेज़ी शब्दकोष में ढेर सारे शब्द हैं और उनमें से अधिकांश अत्यन्त "प्यार भरे" हैं – जैसे स्टुपिड, फूल, सिली, यू इडियट, डैम इट, शट अप, गेट आउट आदि। इन्हें सुनकर लगता था कि सिखानेवाले का ही नहीं, खुद मैना का स्वभाव भी थोड़ा झगड़ालू किस्म का है।

इधर मैना को बंगाली भाषा सिखाने का निताई बाबू का कार्यक्रम भी चालू था। राधाकृष्ण, जय माँ तारा, दुर्गा, कुछ खाने को दो, आइए बैठिए, क्या हाल हैं? आदि दफ्तर जाने से पहले और दफ्तर से आने के बाद निताई बाबू मैना को सिखाने की कोशिश करते। आधे घण्टे बाद मैना बोलती, "स्टॉप इट, स्टॉप इट!" और निताई बाबू का मन निराशा से भर जाता। शायद इस पक्षी की जीभ अँग्रेज़ी बोलने के लिए ही बनी है – वे सोचते।

दो महीने में मैना को बंगाली भाषा सिखाने की कोशिश निताई बाबू ने आखिर छोड़ ही दी, लेकिन घर में मैना हो – यह इच्छा खत्म नहीं हुई। आखिर उन्होंने निर्णय किया कि यह मैना मणिलाल को वापस कर आएँगे और इसकी जगह दूसरी मैना ले आएँगे जो सिर्फ बंगाली बोलती हो।

दफ्तर में कोई छुट्टी नहीं थी फिर भी एक दिन दफ्तर से छुट्टी लेकर निताई बाबू न्यू मार्किट गए।

मणिलाल कर्मकार ने उन्हें देखते ही पहचान लिया और बोले, "आइए आइए! ये तो कमाल हो गया!"

निताई बाबू ने देखा कि दुकान में एक और ग्राहक बैठा है।

"मुझसे ऐसी गड़बड़ हो गई उस दिन," मणिलाल बोला, "कि मैंने फेरिस साहब की मैना आपको दे दी। अब फेरिस साहब अपनी मैना को ढूँढते हुए यहाँ आए और मुझ पर चढ़ बैठे।"

फेरिस साहब को देखकर निताई बाबू को लगा कि मैना के मालिक के बारे में उन्होंने जो अन्दाज़ा लगाया था, फेरिस साहब ठीक वैसे ही थे – नकचढ़े और झगड़ालू। निताई बाबू के हाथ से पिंजरा लगभग छीनते हुए फेरिस साहब बोले, "दैट इज़ माय मैना।"

निताई बाबू बोले, "मैं ये मैना रिटर्न करने ही आया था। यू मे टेक यॉर मैना बैक।"

"मैं एक महीने के लिए ऑस्ट्रेलिया गया था। पीछे से मेरे बेटे को पैसे की ज़रूरत पड़ी तो स्काउंड्रल (दुष्ट) ने मेरी मैना को बेच

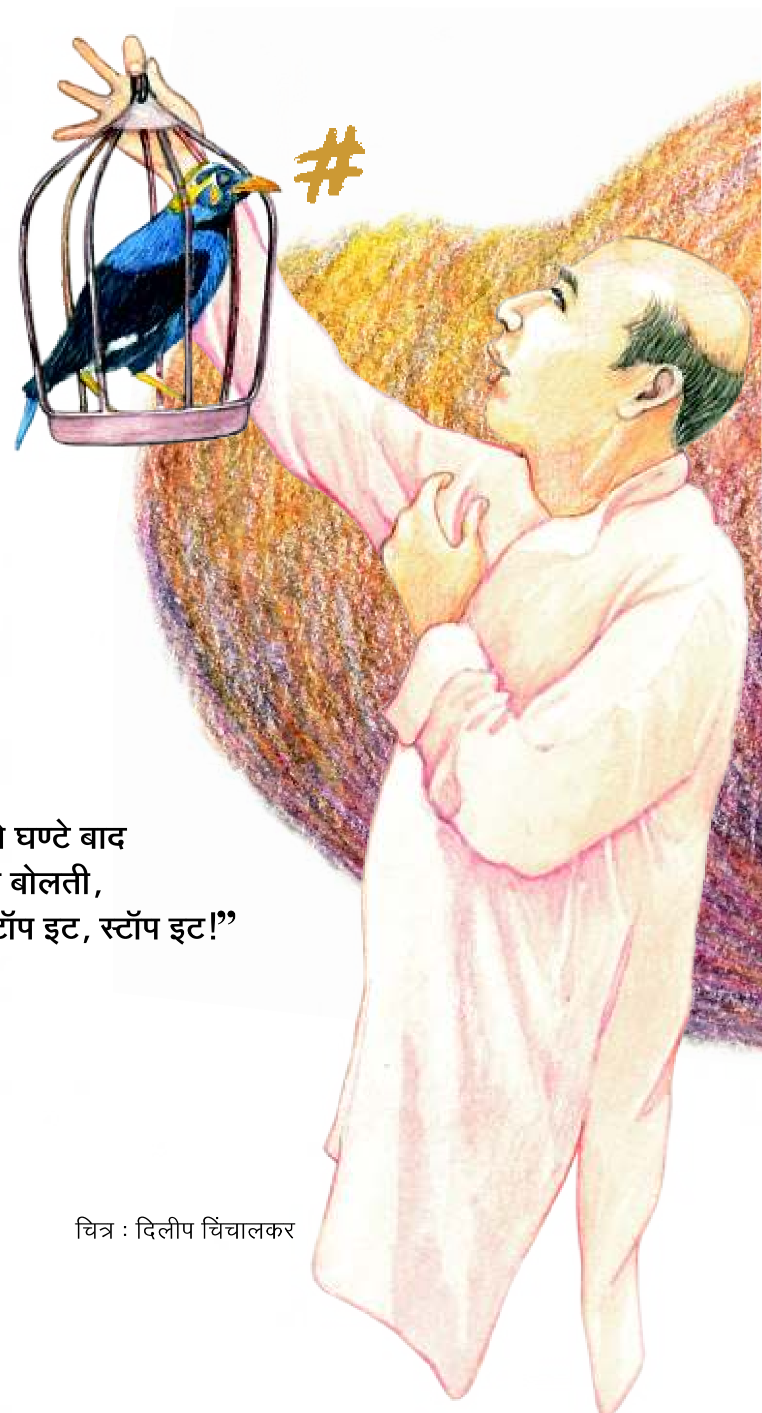

आधे घण्टे बाद मैना बोलती, "स्टॉप इट, स्टॉप इट!"

चित्र : दिलीप चिंचालकर

दिया। मैं लौटकर आया तो देखा कि घर में मैना नहीं है। पीटर ने बताया तो मैं भागा-भागा मणिलाल की दुकान पर आया। यहाँ आकर पता चला कि इस बेवकूफ ने वह मैना किसी बंगाली आदमी को बेच दी है! मैं अपना माथा ठोक ही रहा था कि आप दिखाई दे गए।" फेरिस साहब ने बताया।

"कोई बात नहीं, मैं दूसरी मैना खरीद लूँगा।" निताई बाबू बोले।

"क्यों? ये आपको पसन्द नहीं आई?"

"वो बात नहीं। लेकिन ये अँग्रेज़ी के अलावा कोई भाषा बोलती ही नहीं है। मैं दो महीने तक कोशिश करके भी इसे बंगाली नहीं सिखा पाया।"

"तो आप दूसरी ले लीजिए। मेरे पास एक बहुत अच्छी आसामी मैना है, अच्छी बंगाली बोलती है।" मणिलाल ने कहा।

"दिखाओ!"

मणिलाल भीतर से एक पिंजरा निकाल लाया।

जैसे ही निताई बाबू पिंजरे के सामने गए, मैना बोली, "चिन्तामणि! चिन्तामणि!"

निताई बाबू बोले, "मुझे यही मैना चाहिए।"

"आपने मेरी मैना कितने में खरीदी थी?" फेरिस साहब ने पूछा।

"पिंजरे समेत तीन सौ रुपए।"

"मेरे काबिल बेटे की वजह से मुझे अपनी खुद की मैना तीन सौ रुपए में खरीदनी पड़ रही है। उम्मीद करता हूँ दो महीने में ये अँग्रेज़ी भूल न गई हो!"

अपनी मैना पाकर फेरिस साहब का चेहरा खिल गया।

निताई बाबू ने फेरिस साहब से मिले तीन सौ रुपए मणिलाल को दिए।

मणिलाल बंगाली में फुसफुसाकर बोला, "इन्हें अपनी मैना यहाँ नज़र नहीं आई तो मुझ पर इतना चिल्लाए कि आपको क्या बताऊँ!"

फेरिस साहब अब अपने हाथ में आई मैना को देखते हुए बोले, "टूट्सी! से हैलो! गुड मॉर्निंग! से हैलो! गुड मॉर्निंग!"

पिंजरे की मैना कुछ क्षण चुप रही और फिर मीठी-सी आवाज़ बनाकर बोली, "राधाकृष्ण! ठाकुर, खाना दो। दुर्गा! दुर्गा!!"

एक क्षण के लिए फेरिस साहब को लगा, कहीं ये मैना उनके साथ – सबके साथ – मसखरी तो नहीं कर रही है?

प्रस्तुति - स्वयं प्रकाश

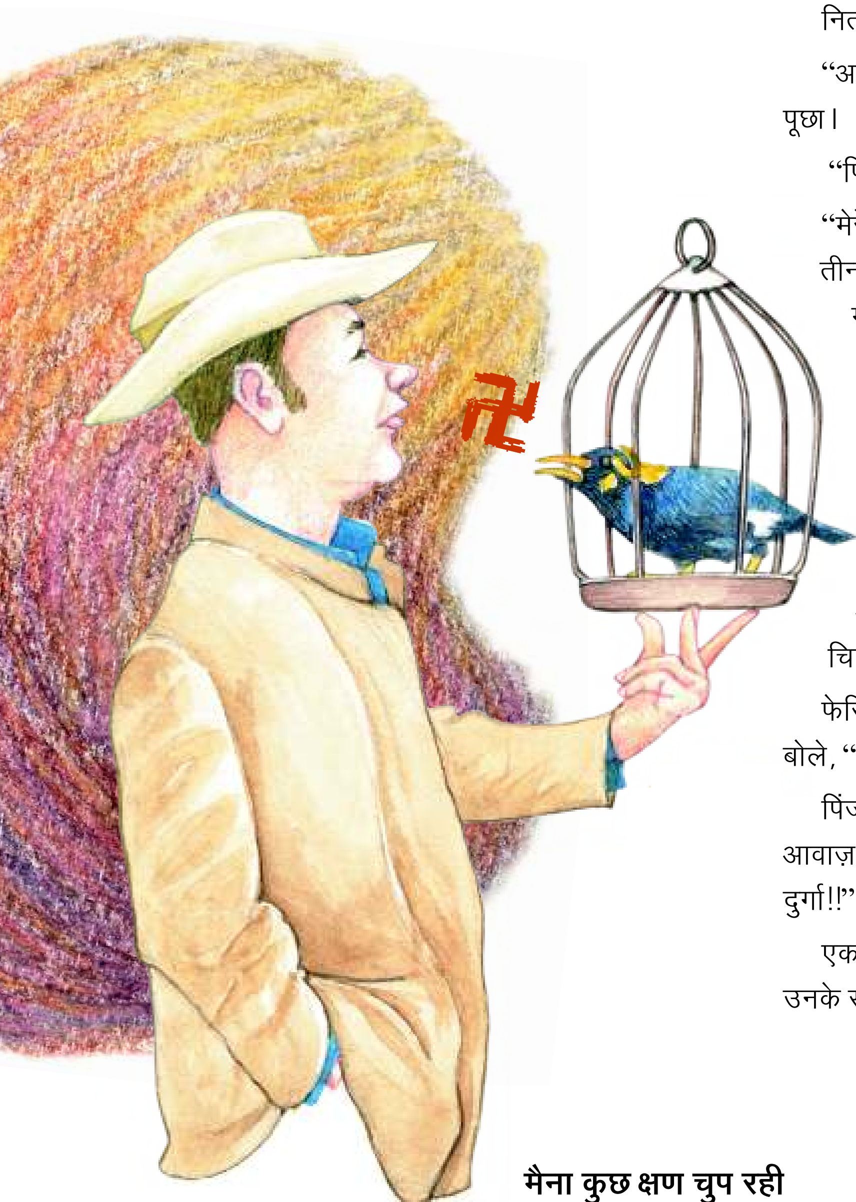

मैना कुछ क्षण चुप रही और फिर मीठी-सी आवाज़ में बोली, "राधाकृष्ण! दुर्गा! दुर्गा!!"

सादे पानी की अनोखी खूबियाँ

सुशील जोशी

पानी के बारे में तमाम कहावतों और मुहावरों को देखें तो लगता है कि लोग इतना तो काफी समय से समझते आए हैं कि पानी में कुछ तो बात है जो उसे खास बना देती है। या शायद ये मुहावरे/कहावतें सिर्फ इसलिए प्रचलित हैं क्योंकि हवा के बाद पानी ही हमारे आसपास पाई जानेवाली सबसे आम चीज़ है। या यह भी हो सकता है कि पानी इतना उपयोगी है कि हम उसके बारे में काफी सोचते हैं। मगर उससे सबसे जुदा, मैं तुम्हें कुछ ऐसे तथ्य बताना चाहता हूँ जिनकी वजह से पानी एक खास चीज़ है।

तुम्हारा क्या ख्याल है किसका तापमान सबसे पहले 40 डिग्री सेल्सियस पर पहुँच जाएगा?

जैसे शायद तुम्हें पता न हो कि पानी को गर्म करना सबसे मुश्किल काम है। मतलब वैसी कोई मुश्किल नहीं है, पानी को पतीली में भरकर चूल्हे या सिगड़ी या गैस पर रख दो तो वह गर्म हो जाएगा, जैसे और चीज़ें भी गर्म होती हैं। मगर मुश्किल यह है कि पानी को किसी अन्य चीज़ के बराबर गर्म करने के लिए सबसे ज़्यादा ऊष्मा देनी पड़ती है। यहाँ बराबर गर्म करने का एक खास मतलब है। हमारे शरीर का तापमान आम तौर पर 37 डिग्री सेल्सियस या 98.4 डिग्री फैरनहाइट होता है। इससे ज़्यादा हो जाए तो कहते हैं बुखार है। चलो खुद को छोड़कर पानी पर लौटते हैं।

मान लो तुम्हारे पास कई सारी चीज़ें हैं। सरलता के लिए मान लो कि सारी चीज़ें द्रव हैं – पानी, तेल, मिट्टी का तेल वगैरह। इन सबका तापमान बराबर है, मान लेते हैं कि सबका तापमान 30 डिग्री सेल्सियस है। अब इन सबकी बराबर-बराबर मात्रा लेकर गर्म करना शुरू करते हैं। इस बात का ध्यान रखेंगे कि सबको एक-जैसे बर्तन में लेकर एक-जैसे चूल्हे पर तपाया जाए। मान लो हम इन सबको इतना गर्म करते हैं कि सबका तापमान 40 डिग्री सेल्सियस हो जाए। तुम्हारा क्या ख्याल है किसका तापमान सबसे पहले 40 डिग्री सेल्सियस पर पहुँच जाएगा?

अभी हाल ही में शिक्षकों के साथ एक शिविर में जब यह प्रयोग किया गया तो सारे शिक्षकों का ख्याल था कि तेल को गर्म होने में ज़्यादा समय लगेगा। मगर जब वास्तव में यह प्रयोग किया गया तो पता चला कि पानी सबसे बाद में 40 डिग्री सेल्सियस पर पहुँचा था। सब आश्चर्यचकित थे। वास्तव में उन्हें यह बात पता थी मगर करके देखा नहीं था और इसलिए विश्वास नहीं था।

पानी की इस खूबी का फायदा हम खूब उठाते हैं। क्या तुम सोच सकते हो कि कहाँ! प्रकृति में कई घटनाएँ भी इसी गुण से संचालित होती हैं।

पानी की एक और खूबी की ओर ध्यान दिलाता हूँ जो शायद तुम्हें पता होगी पर ध्यान नहीं दिया होगा। घी को कड़ाही में डालकर गर्म करते हुए तो तुमने ज़रूर देखा होगा। शरबत, गन्ने के रस में बर्फ डालकर भी देखा होगा। क्या तुम याद करके बता सकते हो कि कड़ाही में जब घी पिघलकर द्रव बनने लगता है तो

ठोस घी कहाँ रहता है और तरल घी कहाँ रहता है? और क्या तुम्हें याद है कि गन्ने के रस में (या चाहो तो पानी में) बर्फ डालते हैं तो पानी कहाँ रहता है और बर्फ कहाँ रहती है?

ऊपर के उदाहरण में हमने दो पदार्थों की दो-दो अवस्थाएँ देखीं – तरल घी और ठोस घी तथा तरल पानी और ठोस पानी (यानी बर्फ)। इनमें एक बुनियादी अन्तर है – ठोस घी तरल घी में डूबा रहता है (पेंदे में पड़ा रहता है ना?) जबकि ठोस पानी (बर्फ) तरल पानी के ऊपर तैरता है। और मैं तुम्हें बता दूँ कि पानी ही एकमात्र ऐसा पदार्थ है जिसका ठोस रूप (बर्फ) तरल रूप (पानी) के ऊपर तैरता है। इसका मतलब क्या है?

जब कोई चीज़ तरल के ऊपर तैर रही है तो निश्चित रूप से उस चीज़ का घनत्व तरल से कम है। बर्फ यदि पानी पर तैर रही है तो बर्फ का घनत्व पानी से कम है। बाकी सारे पदार्थों की ठोस-द्रव जोड़ियों में हमेशा ठोस का घनत्व ज़्यादा होता है और वह अपने ही द्रव में डूब जाता है। यानी यदि पिघले हुए मोम में ठोस मोम डालें, पिघले हुए लोहे में ठोस लोहा डालें, तो वे डूब जाएँगे। इस मामले में भी पानी विचित्र और अनोखा है।

पानी की इस खूबी के भी कई उपयोगी उदाहरण हैं। ज़रा सोचकर देखो कि यह गुण कहाँ-कहाँ झलकता है।

यदि तुम पानी के इन दो अनोखे गुणों के कुछ उदाहरण लिख भेजोगे तो बात को आगे बढ़ाएँगे और देखेंगे कि पानी किन और मामलों में अनोखा है। चकमक

घनत्व के मामले में भी पानी विचित्र और अनोखा है।

(पेज 9 का शेष)

कथा कही एक प्राचीन मूर्ति ने!

क्या इस मूर्ति के बारे में तुम भी कुछ पड़ताल करना चाहोगे? तो पता करो कि यह मूर्ति किस पत्थर से बनी होगी – लाल बलुआ पत्थर या ग्रेनाइट से? यह पत्थर मन्दिर के आसपास से मिला होगा याकि ऐसी जगह से जहाँ काफी सारे कारीगर काम करते थे।

लगता है कि मूल मूर्ति बन जाने के बाद किसी शागिर्द ने टूटे हुए हिस्से पर अपने हाथ आज़माए होंगे।

या

गुरू शिल्पकार ने अपनी बेटी से शादी करनेवालों के सामने यह शर्त रखी होगी कि इस टूटे शिल्प को बिना किसी जोड़ के जो पूरा कर लेगा वही ब्याह का हकदार होगा।

या

जब सारे प्रतिभागी हार गए तो खुद शिल्पकार की बेटी ने बताया कि मूर्ति को कैसे पूरा किया जा सकता है...

या

किसी बूढ़े शिल्पकार को इतनी सारी सामग्री और मेहनत का यूँ ज़ाया जाना बुरा लगा होगा और उसने अपने तरीके से इसे पूरा करने की बात सोची होगी। चकमक

पता नहीं कौन!

चन्द्रकान्त देवताले

चित्रः अतनु राय

अभी एक माह पहले की बात...मैं अपने घर के गेट के बाहर खड़ा था। मेरे यहाँ दो-तीन पालतू कुत्ते हैं और बाहर के कुत्तों को भी कुछ न कुछ खिलाते हैं।

तो एक सात-आठ साल का बच्चा अपनी छोटी दो पहिया सायकिल पर जा रहा था। मुझे देखकर वह रुक गया और दूर नुक्कड़ पर बैठे एक कुत्ते को देखकर उसने मुझसे पूछा, "दादाजी वह कुत्ता काटेगा तो नहीं?" मैंने कहा, "तुम जाओ, डरना मत मैं अभी तुम्हारे सामने उसे मोबाइल से समझा देता हूँ।"

फिर जेब से मोबाइल निकाल मैं यूँ ही बोलने लगा, "फायर देख यह सायकिल पर जो बच्चा जा रहा है अपना ही है इसे कुछ मत कहना।"

बच्चा अचरज से देखता रहा। फिर अपने खींसे (जेब) से मोबाइल निकाल

अपनी छुटकी सायकिल पर रवाना होने से पहले उसने मोबाइल कान पर लगाया और बोला, "दादाजी, थैंक यू! डॉग ने कह दिया है निकल जाओ मैं शान्त बैठा रहूँगा।" और वह चला गया। मैं चकित, सोचने लगा कौन बना बुद्धू फिर मुझे लगा शायद मैं ही।

देवांश, पाँचवीं, डीपीएस, पटना

बोलीरंगोली

कानों की इक नगरी देखी जिसमें सारे काने थे
एक तरफ से अहमक सारे एक तरफ से स्याने थे
कानों की उस नगरी के सब रीत-रिवाज़ अलहदा थे
रोग अलहदा बस्ती में थे और इलाज़ अलहदा थे
दरिया पुल पर चलता था पानी में रेलें चलती थीं
लँगूरों की दुम पर अँगूरों की बेलें फलती थीं

चाँदनी रात की छतरी लेकर बाहर जाया करते थे
ओस गिरे तो कहते हैं वाँ, सर फट जाया करते थे
घण्टी बाँध के चूहे जब बिल्ली से दौड़ लगाते थे
खाली पेट पे हाथ बजाकर सब कव्वाली गाते थे
झूठा है जो अन्धी नगरी काना राजा कहता है
जाकर देखो कानी नगरी अँधा राजा रहता है

-गुलज़ार

इस बार फिर एक कविता सुनो।
पढ़ोगे तो कविता लगेगी और सोचोगे तो पहेली।
तो इस पहेली को बूझो और चित्र बनाओ।

ग्यारह ऊँट थे

ग्यारह ऊँट थे और तीनों में बँटने थे
पहला शागिर्द जो उम्र में उन दोनों से बड़ा था, बोलाः
"आधी उम्र हुज़ूर की मैंने खिदमत की है
आधे ऊँट तो मेरे होंगे!"
दूसरा बोला, "एक चौथाई तो मैंने भी काटी है।"
तीसरा सब से बाद में आया था
वो बोला, "बीस बरस से तो मैं भी हूँ।
कम से कम एक छटा हिस्सा तो मेरा भी है!"
लेकिन ग्यारह ऊँट थे तीनों में वो बँटते कैसे?
पीर साहब ने मरते-मरते
पहले शागिर्द से इतना कहा था
"जितने ऊँट हैं मेरे सब आपस में ले लो
लड़ना मत, और देखो ना-इन्साफी न हो!"
ग्यारह ऊँट थे तीनों में वो बँटते कैसे?
पीर साहब के एक बड़े भाई थे
उम्र में और दानाई में वो सब से बड़े थे
लेकिन उठकर चलने से माजूर थे वो
तीनों उनके पास गए, तो लेटे-लेटे बोलेः
"एक ऊँट बचा है मेरा, वो ले जाओ
काम निकल जाए तो वापस कर जाना!"
बारह ऊँट हुए तो पहला,
आधे लेकर अलग हुआ!
दूसरे ने भी एक चौथाई, तीन निकाले, अलग हुआ
तीसरे ने भी, एक छटा हिस्सा पाया, दो ऊँट मिले
एक ऊँट फिर बचा रहा
जो लिया था, जाकर लौटा आए!

– गुलज़ार

अमृता यादव, ग्यारहवीं, मॉडल हा. से. स्कूल भोपाल

सिमरन कौर,
सातवीं,
सनसिटी स्कूल,
गुड़गाँव

कीर्ति साहू, ग्यारहवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

विक्रमराज,
नौवीं,
बाल भवन किलकारी,
पटना

सुमित रंजन,
नौवीं, डीपीएस, पटना

बोलीरंगोली

नवम, पाँचवीं, सनसिटी, गुड़गाँव

राहुल श्रीवास्तव, बारह वर्ष, नेशनल बाल भवन, दिल्ली

हो सकता है बड़े तुम्हें इसके अर्थ बताएँ। उनके अर्थ सुनो-समझो पर चित्र अपने मन का ही बनाओ...। कोशिश करना कि तुम्हारा चित्र हमें **15 सितम्बर** तक मिल जाएँ। चित्र के साथ अपना पता, कक्षा, फोन नम्बर ज़रूर लिखना। पता है -

चकमक
एकलव्य,
ई-10, शंकर नगर, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016
(फोन - 09425010115)
चाहो तो ईमेल कर दो
chakmak@eklavya.in

एक गतिविधि

पानी पानी है?

रिमझिम बरसे पानी
बारिश का पानी, नदी का पानी
कुएँ का पानी, तालाब का पानी
पानी की नानी से पूछो कहानी?

प्रिय दोस्तो,

सुना था इस साल बारिश कम होगी। थोड़ी चिन्ता भी थी इसे लेकर। पर अभी तो हालत यह है कि देश के अनेक हिस्सों में बादल नाचते, कूदते, चीखते, चिल्लाते अपना-अपना पानी धरती पर बिखेर रहे हैं। और धरती पर रहने वाले इंसान, पशु, पक्षी पेड़-पौधे, जीवाणु सभी इस पानी से अपने-अपने ढंग से मज़ा लूट रहे हैं। बचपन में हमारे बड़े हमें बारिश का पानी इकट्ठा करने को कहते थे। हमारे दादाजी हमसे ओले इकट्ठा करने को कहते। उनके हिसाब से बारिश और ओलों का पानी आँख की और त्वचा की कई बीमारियों के लिए दवा बनाने में काम आता है। बाद में कुछ बच्चों को मैंने बारिश का पानी बैट्री में डालने के लिए भी इकट्ठा करते हुए देखा है। तो मेरे मन में यह सवाल उठता था कि बारिश के पानी और नदी, कुएँ और तालाब आदि के पानी में क्या फर्क होता है! अगर कहीं पानी की नानी मिल जाती तो शायद वे अपने इन नातियों के बारे में बता सकती थी। लेकिन अब तक तो वो मुझे मिली नहीं। खैर, मुझे लगता है कि यह काम हम भी कर सकते हैं। तो इस बार अपन प्रयोगों द्वारा और अपने आसपास के लोगों से बात करके बारिश और दूसरे पानियों में फर्क पता लगाते हैं। जो भी नतीजे निकलें हमें भेजना। हमें तुम्हारे पत्रों का इन्तज़ार रहेगा।

- अंकुश गुप्ता

चित्रः विष्णु चिंचालकर

Srijesha

एक इतालवी लोककथा

संकलनः
इतालवियो कैल्विनो

अनुवादः
मनोज पटेल

चमकीली मछली

एक बहुत बूढ़ा आदमी था। उसके बच्चे मर चुके थे। उसे सूझ नहीं रहा था कि उसका और उसकी बीबी का गुज़ारा कैसे होगा। वह रोज़ जंगल जाता और वहाँ से जलावन बटोरकर उसे बेच आता। ताकि वह राशन खरीद सके और किसी तरह गुज़र-बसर कर सके।

एक दिन जब वह दुखी मन से जंगल से गुज़र रहा था तो उसे लम्बी दाढ़ीवाला एक भला आदमी मिला। उसने कहा, "मैं तुम्हारी मुसीबतों के बारे में जानता हूँ और तुम्हारी मदद करूँगा। ये लो इस बटुए में सौ रुपए हैं।"

बूढ़े ने बटुआ ले लिया और बेहोश होकर गिर पड़ा। जब उसे होश आया, वह आदमी गायब हो चुका था। बूढ़ा घर पहुँचा और अपनी बीबी को कुछ भी बताए बिना बटुए को उसने गोबर के ढेर में छुपा दिया। उसने सोचा कि अगर उसे पता चलेगा तो पैसा खर्च कर डालेगी...। दूसरे दिन वह हमेशा की तरह फिर जंगल में गया।

शाम को उसने खाने की मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजन सजे देखे। "तुम ये सब कैसे खरीद लाईं?" उसने शंका करते हुए पूछा।

"मैंने गोबर की खाद बेच डाली।" उसकी बीबी ने बताया।

"अभागी! मैंने उसमें सौ रुपए छुपाए थे!"

अगले दिन बूढ़ा और ज़्यादा आँहें भरते हुए जंगल से गुज़र रहा था। उसे फिर से वही लम्बी दाढ़ीवाला भला आदमी मिला। "मुझे तुम्हारी बदकिस्मती के बारे में पता है।" उसने कहा। "शान्त हो जाओ। ये लो सौ रुपए और।"

इस बार बूढ़े ने पैसों को राख के ढेर में छुपा दिया। अगले दिन उसकी बीबी ने राख बेचकर एक और शानदार दावत का इन्तज़ाम किया। जब बूढ़े ने लौटकर यह सब देखा तो उससे एक कौर भी खाया न गया और वह अपने बाल नोंचते हुए बिस्तर पर लेट गया।

अगली सुबह वह जंगल में बैठा रो रहा था जब फिर से वह भला आदमी प्रकट हुआ। "इस बार मैं तुम्हें पैसे नहीं दूँगा। ये चौबीस मेंढक लो और इन्हें बेचकर जो सबसे बड़ी मछली तुम्हें मिले, खरीद लेना।"

बूढ़े ने मेंढकों को बेचकर एक मछली खरीद ली। रात में उसने पाया कि वह जगमगा रही थी; उससे बहुत तेज़ रोशनी निकल रही थी जो चारों ओर उजाला कर रही थी। उसे पकड़ना एक लालटेन लेकर चलने जैसा था। मछली को तरोताज़ा बनाए रखने के लिए उसने उसे शाम को खिड़की के बाहर लटका दिया। वह अँधेरी और तूफानी रात थी। ऊँची-ऊँची लहरों के बीच समुद्र में फँसे मछुआरे को अपना रास्ता नहीं सूझ रहा था। खिड़की पर रोशनी देखकर उन्होंने उसी तरफ अपनी नाव खेई और बच गए। उन्होंने बूढ़े को मछलियों से हुई कमाई का आधा हिस्सा दे दिया और उससे समझौता किया कि यदि वह हर रात खिड़की पर अपनी मछली लटका दिया करे तो हर रात की कमाई का उसे भी कुछ हिस्सा मिलेगा। उन्होंने ऐसा ही किया और उस बूढ़े के सभी दुख दूर हो गए।

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

घुद्दा सांडोबा हमारा लाडोबा

दिलीप चिंचालकर

टान-टून हाथी महाराज

कच्चे सींगोंवाली कपिला और सुशिला

साँडोबा भी हुआ तो साँड ही। मराठी में चलन है कि जो अख्खड़-मनचला हो मगर प्रिय हो उसके नाम के बाद बा लगाना। यह साँडोबा भी अनजाने में हमारे कुनबे में घुस आया है। गौरैया कुन्ज के कुनबे में कई तरह के प्राणी हैं, बस गौरैया ही कम हैं, कभी-कभी आती है। दो अल्सेशियन बेटियाँ हैं काकुल और रैना। दो-तीन मनमौजी बेघर कुकुर हैं। बागड़ में रहनेवाली दर्जिन और फुदकी से लेकर बड़े नीम पर टेर लगाने वाले धनेष और कूकल हैं। दो गिलहरियाँ हैं – सावित्री और जावित्री। एक बारहमासी मेंढक है और एक जोड़ा छछूँदर हैं जो नागराज के बगीचे से चले जाने के बाद यहाँ रहने आए हैं। एक हाथी महाराज हैं जो छठे-चौमासे दरवाज़े पर आकर टान-टून करते दस्तक देते हैं और संध्या से गुड़ की डली लेकर ही हटते हैं। फिर कपिला और सुशिला हैं – कच्चे सींगोंवाली दो किशोर गाएँ। और अब ये साँडोबा। इन सबके नाम से घर में रोज़ रोटी जो बनती हैं।

उम्र में कुछ बड़ा, डील-डौल में कुछ छोटा। सींग नीचे की ओर मुड़े हुए, दुम के बाल झड़े हुए। साँड होकर भी जो गोजिरवाणा लगे यानी मराठी में जिसे लड़ियाने का मन करे। बस यही देखकर संध्या ने उससे रोटी-बेटे का रिश्ता बना लिया। वह एकाध-दो दिन छोड़कर हमारे घर के सामने से गुज़रता। मगर रोटी तो प्रतिदिन बनती थी। फिर हम उसे यहाँ-वहाँ तलाशने लगे। कभी सामनेवाले मुहल्लों में, कभी बड़ी सड़क पर कभी चौराहे के उस ओर। रोटी खिलाने के बाद हम साँडोबा के माथे पर हाथ ज़रूर फेरते। उसे यह खास पसन्द नहीं आता। वह तुरन्त ही सिर हिलाकर इस सहलाने को झटक देता। संध्या उसे जब तब झिड़की देती – भैया यहाँ क्यों बैठे हो? कचरा क्यों खा रहे हो? वगैरा। साँडोबा को कुछ लगे ना लगे, हमें तो लगता कि वह हमारे घर का बच्चा है। आवारागर्दी करके बिगड़ रहा है।

लगाव तो शायद साँडोबा को भी हमसे हो चला था। जब भी वह हमारे घर के सामने से होकर सामने वाली गली में घूमता,

मोड़ पर खड़े होकर कुछ देर हमारा इन्तज़ार करता। हाँ, एक बार आगे निकल जाए तो वापिस पलटकर नहीं देखता, चाहे जितना पुकार लो। साँड जो था! हठी तो उसे होना ही था। एक बार तो बगीचे की चारदीवारी पर माथा भिड़ाकर खड़ा हो गया। बाकी धड़ ने आधी सड़क रोक ली। राहगीर परेशान। आने-जानेवाली मोटरगाड़ियाँ शोर मचाने लगीं। आखिर संध्या उसे रोटी खिलाकर पीठ थपथपाई तब साँडोबा का धरना खत्म हुआ।

साँडोबा की मटरगश्ती एकाध किलोमीटर के चौरस दायरे में चलती रहती। न उधर गाड़ी अड्डे की तरफ जाता न इधर चिड़ियाघर वाले पुल का रुख करता। एक बार युनिवर्सिटी की ओर जानेवाले कच्चे रास्ते पर हमने उसे बदहवास खड़ा देखा। उसका हालचाल पूछते हुए मैंने उसके माथे पर हाथ फेरना चाहा तो वह झुँझला गया। आज यह क्या हो गया इसे? हमने सोचा। आगे एक भीमकाए काला साँड खड़ा था। उसके नथुनों से फेन गिर रहा था। लगा दोनों में ठन गई थी। काले साँड ने हमारे साँडोबा को खदेड़ दिया था। शायद इसलिए वह नहीं चाहता था कि अपने प्रतिद्वन्दी और दूसरी गायों के सामने कोई उसे भैया-भैया कहकर पुचकारे।

जो भी हो, अगली सुबह साँडोबा लँगडाते हुए और हमारे घर के सामने मोड़ पर बैठ गया। बैठा तो दो दिन नहीं उठा। एक टाँग में चोट जो लग गई थी। संध्या ने उसकी खूब तीमारदारी की। रोटी, हरा चारा, आम-पपीते के छिलके और भी कुछ-कुछ खिलाया। उसके ज़ख्म पर दवा की। माथे पर हाथ भी फेरा। तीसरी सुबह बिना बताए साँडोबा यह जा वह जा। संध्या को उसकी चिन्ता थी सो स्कूटर पर बैठ उसे यहाँ-वहाँ ढूँढ आई। साँडोबा उसे एक कचरे की कोठी के पास जुगाली करता हुआ मिला। वह नाराज़ ही घर लौटी थी। हमने भी उसे कुछ दिन अनदेखा करने का तय कर लिया।

उस रोज़ मैं जानवरों के सरकारी अस्पताल गया था। बस यूँ ही, डॉक्टर अवस्थी से दुआ-सलाम करने। वे एक बकरी को जाँच रहे थे। मैं बगल वाली कुर्सी पर बैठा उसे सहला रहा था। अचानक बाहर फर्श पर खुरों की हड़बड़ाहट और धक्का-मुक्की की आहट सुनाई दी। पास ही में आवारा पशुओं का कोंडवाड़ा था। मैंने देखा कि बाड़े के टूटे-लटके दरवाज़े के पीछे से साँडोबा मेरी ओर ताक रहा था। मेरी आवाज़ उसने पहचान ली थी।

आप कहते हैं कि एक बार आगे निकल जाए तो वापिस पलट कर नहीं देखेगा तब वह ज़रूर देखेगा।

अरे, तुम यहाँ...?

आवारागिर्दी का नतीजा भुगत रहा था साँडोबा। मगर बच्चा तो अपना ही था। मैंने डॉक्टर साहब की चिरौरी की। कुछ रुपयों का चालान कटवाया और साँडोबा से कहा, "घर चलो, फिर बताते हैं।" अपना स्कूटर वहीं छोड़कर मैं पुल तक उसके आगे-आगे पैदल आया ताकि वह इस अंजान इलाके में भटक न जाए।

इस बात को भी अब साल से ऊपर हो गया। साँडोबा के चाल-चलन में कोई फर्क नहीं आया है। बल्कि लगता है अब वह ज़्यादा ही ज़िद्दी हो गया है। लाडोबा।

पंजाबी बाल उपन्यास

(आठवीं किस्त)

जंगल से चिड़ियाघर की ओर

जसबीर भुल्लर

आपसी सलाह-मशविरे के बाद अधिकारी रौबीले स्वर में बोला, “किसी के मन में कोई शक हो तो अभी पूछ ले। इसके बाद मगरमच्छ के पकड़े जाने तक कोई बात नहीं करेगा। आवाज़ सुनकर वह नदी में भी जा सकता है।”

“सर! अगर हमें कोई खतरा लगे तो क्या हम मगरमच्छ को मार सकते हैं?” एक व्यक्ति ने पूछा।

“नहीं!”

“सर! इस में जान जाने का खतरा है?” एक और बोला।

“जिसे डर लगता है वह चाहे तो जाकर जीप में बैठ जाए।”

अधिकारी की आवाज़ सख्त हो गई।

इसके बाद कोई आवाज़ नहीं आई। कुछ देर बाद कीचड़ में उनके बूँटों की छप्प-छप्प सुनाई देने लगी। अँधेरा घना हो गया। उन्होंने अपनी टॉर्चें जला लीं। टॉर्च की रोशनी गोल घेरों में इधर-उधर घूमने लगी।

किरली मगरमच्छ इस सबसे बेखबर अपनी जगह पर आराम से पड़ी रही। उन जीवों पर हमला करने का उसका कोई इरादा न था। अचानक टॉर्च की रोशनी किरली की आँखों पर पड़ी। उसने गुस्से से ज़मीन पर पूँछ पटकी। कीचड़ में बिना डिले-डुले पड़ी वह कीचड़ का ही हिस्सा लगती थी। जो न हिलती तो उसके वहाँ होने का पता ही न चलता। ...पर किरली गलती कर चुकी थी।

उसी समय सीटी की आवाज़ गूँजा। यह सबके लिए उस स्थान पर इकट्ठे होने का संकेत था। किरली गुस्से में उस आदमी पर झपटी। उसने जल्दी से लाठी उसकी ओर फेंक दी। लाठी किरली के नथुने से टकराई। उसने गुस्से में लाठी के चिथड़े-चिथड़े कर दिए। किरली के लाठी की ओर ध्यान देने से उस आदमी को सँभलने का मौका मिल गया। उसने एक तरफ हो कर पैंतरा ले लिया। तब तक दूसरे साथी भी वहाँ पहुँच गए थे। किरली फिर से हमला करने के लिए आगे बढ़ी तो पीछे से उसके गले में फन्दा आ पड़ा। उसने पलटकर देखा। केवल पीछे ही नहीं, उसके दाएँ-बाएँ भी आदमी खड़े थे। किरली को उसी पल खतरे की गम्भीरता का एहसास हो गया। हड़बड़ी में पलटकर वह नदी की ओर भागी। उसका फन्दा सरकर जबड़े पर कस गया। एक और फन्दा उसके पिछले पैरों में आ पड़ा। रस्सों की जकड़न से छूटने के लिए उसने पूरी ताकत लगाई। उन्माद में पूँछ बार-बार ज़मीन पर पटकी और फिर लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगी।

किरली का पूरा शरीर रस्सों में जकड़ा जा चुका था। उसने परेशान होकर आदमियों की तरफ देखा। वे किसी तरह से भी किरली से ज़्यादा ताकतवर नहीं थे, पर उन्होंने उसे कैद कर लिया था। किरली को इस बात का पहली बार पता चला था कि केवल शरीर की ताकत ही काफी न थी। जब शिकंजा पूरी तरह से कस गया तो लोग रस्सों के सिरों को पकड़कर, किरली को घसीटने लगे। किरली ने आखरी बार उस गड्ढे की ओर देखा जहाँ उसका घर बनना था, पर वह अधखुदा ही रह गया था।

किरली उदास हो गई। उसकी आँखों में आँसू आ सकते तो आज ज़रूर रुलाई फूट पड़ती।

बादल सुबह से ही इकट्ठे हो रहे थे। अचानक बूँदें पड़ने लगीं। सब भीगने लगे, पर वन अधिकारी को वहाँ से जाने की कोई जल्दी नहीं थी। कुछ देर बाद किरली को घसीटते हुए वे

जीप तक ले गए। उन्होंने जीप के पीछे लगी ट्रॉली में बोरियाँ बिछाईं और उसे वहाँ लाद दिया। रात के घुप्प अँधेरे में जीप हिचकोले खाती ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चल पड़ी।

बारिश धीरे-धीरे तेज़ हो गई। घुप्प अँधेरी रात में बिजली कड़कती तो क्षण भर के लिए चारों ओर रोशनी फैल जाती।

उन्होंने रास्ते में एक बार जीप को रोका। वन अधिकारी ने उतरकर किरली की खबर लेकर तसल्ली कर ली। ट्रॉली में जगह तंग होने के कारण उसकी पूँछ मुड़ी हुई थी और थूथनी ऊपर को उठी हुई थी। पर इस बारे में कुछ नहीं किया जा सकता था। वह वापिस आकर जीप में बैठ गया।

कच्चा रास्ता जब पक्की सड़क से जा मिला तो जीप की गति कुछ तेज़ हो गई।

जब तक वे शहर के चिड़ियाघर तक पहुँचे, रात बहुत बीत चुकी थी। वन अधिकारी हृदयपाल आगे की सीट से उतरकर पहरेदार से ऊँची आवाज़ में बोले, "भई! गेट खोलो। एक मादा मगरमच्छ तुम्हारे बड़े परिवार में रहने आई है।"

वे पहले से ही उनका इन्तज़ार कर रहे थे। उनमें से एक ने जल्दी से की-बोर्ड में से चाबी निकाली और गेट का ताला खोलने लगा। एक दूसरा बन्दा चिड़ियाघर के मुख्य प्रबन्धक चेतन खन्ना को सूचना देने भागा।

वे बारिश में पूरी तरह भीग चुके थे। जब जीप से उतरे तो उनके कपड़ों से पानी चू रहा था। वे निचुड़ते हुए शैड के नीचे जा खड़े हुए।

जब चेतन खन्ना वहाँ पहुँचा तो वह भी पूरी तरह भीगा हुआ था। मादा मगरमच्छ के आने की खुशी में वह बरसाती कोट पहनना भूल गया था। उस समय जीप गेट के भीतर खड़ी थी। दोस्त से मिलने की बजाय वह जीप की ट्रॉली की ओर बढ़ा। किरली मगरमच्छ को देखते ही उसका चेहरा चमक उठा। हृदयपाल शैड से निकलकर उसके पास चला आया। चेतन खन्ना ने घूमकर उसे बाँहों में भींच लिया, "यार, तूने तो कमाल कर दिया है।"

"कमाल!" उसने माथा खुजाया।

"चल बैठकर बातें करते हैं," वह हृदयपाल की बाँह थामकर अपने क्वार्टर की ओर चल दिया, "पर एक बात पक्की है, यह मादा मगरमच्छ मैं चिड़ियाघर में नहीं रखूँगा।"

जंगली जीवों के संरक्षण की योजना के बारे में अखबार में एक छोटी-सी खबर थी।

वह खबर पढ़कर चेतन खन्ना ने हरे-भरे जंगल की कल्पना की, जहाँ ऊँचे पेड़ आकाश को छू रहे हैं। उन पर बने घोंसलों को अण्डे पीनेवाले जीवों का कोई भय नहीं है। वहाँ घनी झाड़ियाँ हैं। छोटे जीव जंगल के

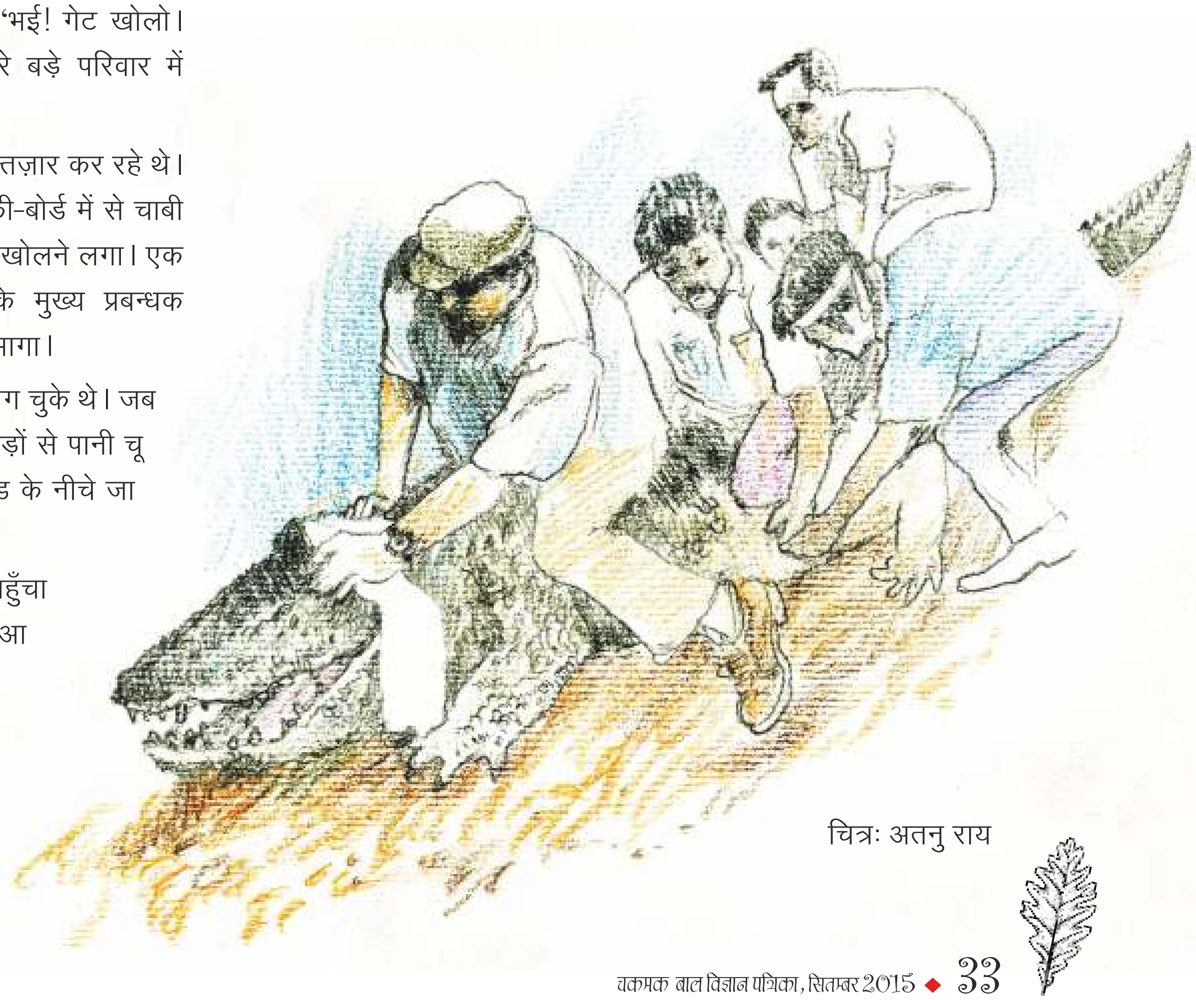

चित्रः अतनु राय

खतरों से बचने के लिए उन झाड़ियों में छिप सकते हैं। वहाँ पत्थरों से टकराकर बहती एक नदी है। मीलों तक फैले जंगल के बीच से गुज़रती यह नदी घुमावदार होने के कारण जंगल से भी अधिक लम्बी है। वहाँ पेड़ों से ढँकी हुई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी हैं। घास से लबालब चरागाहें हैं। वहाँ वह सब कुछ है जो जंगल के जीवों को चाहिए।

जंगली जीवों की शरणस्थली ऐसी ही हो सकती है।

इस समाचार के कुछ दिन बाद चेतन खन्ना को आश्चर्यचकित करनेवाला आदेश मिला। विभाग ने जंगली जीवों के अभ्यारण्य की स्थापना का ज़िम्मा चेतन खन्ना को सौंपा था। यह एक बड़ा काम था। वह पूरे जोश और उत्साह से काम में जुट गया। अभ्यारण्य के लिए उचित स्थान की खोज के लिए उसने तराई के जंगलों का चप्पा-चप्पा छान मारा। जैसा स्थान उसने जंगली जीवों के निवास के लिए सोच रखा था, वह अन्ततः मिल गया। औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद कई मीलों के जंगल को वन्यजीवों के लिए अभ्यारण्य बना दिया गया।

धीरे-धीरे अभ्यारण्य में जानवरों की रौनक बढ़ने लगी। वहाँ किसी जीव के लिए कोई पिंजरा नहीं था। वहाँ कोई जानवर असमय मौत का शिकार नहीं होता था। बीमार जानवरों के इलाज के लिए वहा पूरा प्रबन्ध था।

अभ्यारण्य में अभी कई जीव न थे। वह कमी जल्द ही पूरी हो गई। चेतन खन्ना के पत्र व्यवहार के कारण आवश्यक जानवरों को चिड़ियाघर से अभ्यारण्य में भेजने की आज्ञा मिल गई। नए जानवरों के आने से अभ्यारण्य और भी महत्वपूर्ण हो गया।

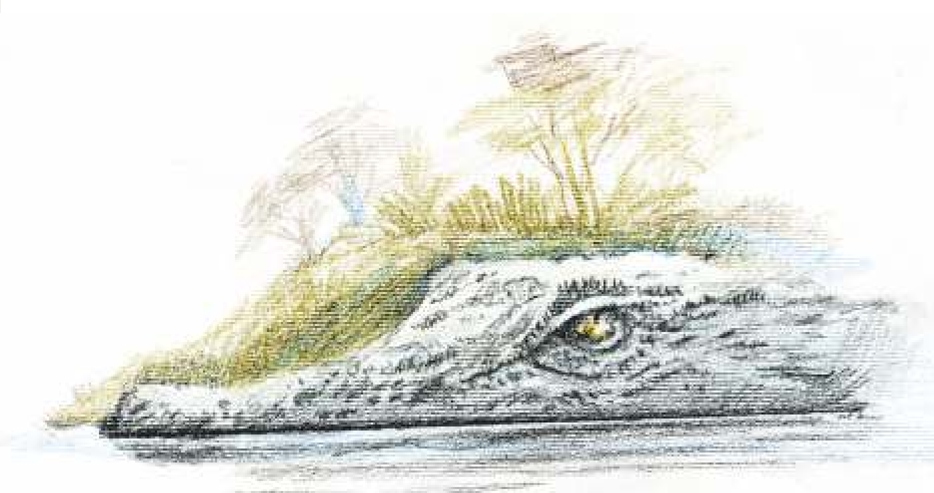

चेतन खन्ना खुश था।

वन्यजीवों के अभ्यारण्य की ज़िम्मेदारी सम्भालने के बाद भी चिड़ियाघर का भार अभी किसी दूसरे को नहीं सौंपा गया था। इससे उसके काम में रुकावट आती थीं। वह सौंपे गए काम को पूरे मन से करना चाहता था, पर उसे चिड़ियाघर के कामों के लिए कई-कई दिन वहीं रहना पड़ता था। चेतन खन्ना चाहता था कि चिड़ियाघर की देखभाल के लिए नया प्रबन्धक जल्दी आए।

रात आधी से अधिक बीत चुकी थी।

चेतन खन्ना और हृदयपाल मुद्दत बाद मिले थे। उनकी बातें खत्म ही नहीं होती थीं। चेतन खन्ना ने अभ्यारण्य के बनने की कहानी संक्षेप में सुनाकर कहा, "हम अब सो जाएँ। सुबह जल्दी उठना होगा।"

गेट से वे किरली मादा को सीधा मगरमच्छों वाले खण्ड की ओर ले गए। चिड़ियाघर की तीन नम्बर गली के चौथे घर में ले जा कर उन्होंने किरली के रस्से खोल दिए।

किरली को कुछ पता नहीं था कि उसे कहाँ लाकर फेंक दिया गया था। वह खुलने के बाद भी वहीं पड़ी रही। वह कुछ डरी हुई थी। साहस जंगली जीवों को जीवित रखता था। वह खुद को ज़िन्दा रखने को जूझते थे, लड़ते थे। जो भी डर जाता था, मारा जाता था। किरली ने अपने डर को झटक दिया। उसने पहले धीरे-से पूँछ हिलाकर देखी, फिर पिछले व अगले पैर सरकाए। उन्होंने सचमुच ही उसके बन्धन खोल दिए थे। वह खतरे से दूर जाने के लिए पानी की ओर भागी।

पानी के अन्दर जाकर उसे निराशा हुई।

अगले अंक में जारी

माथा पच्ची

1 यदि नीचे दी आकृति में सात कोने दिख रहे हैं। हर बार काला बिन्दु घड़ी की सुई की दिशा में 3 कोने आगे बढ़ता है। सफेद बिन्दु घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में 4 कोने बढ़ता है। क्या वे कभी मिल पाएँगे?

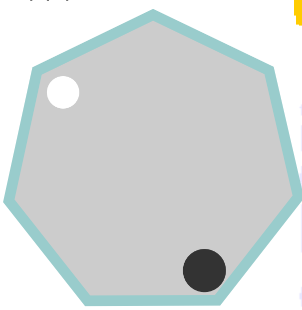

क्या तुम अपने आसपास दिखाई देनेवाली किन्हीं पाँच तितलियों के रंग-रूप, आकार, वो किन फूलों का रस चूसती हैं आदि के बारे में विस्तार से बता सकते हो?

2 एक ऐसा गाँव है जहाँ बिजली व कम्प्यूटर, मोबाइल जैसे आधुनिक गैजेट नहीं हैं। वहाँ एक घर में 8 भाई रहते हैं। एक भाई पढ़ रहा है। दूसरा सफाई कर रहा है। तीसरा खाना पका रहा है। चौथा शतरंज खेल रहा है। पाँचवाँ चिट्ठी लिख रहा है। छठा सो रहा है। सातवाँ पौधों को पानी दे रहा है। सोचकर बताओ कि आठवाँ भाई क्या कर रहा होगा?

दूध का पोता, दही का बच्चा
लोग इसे खाते हैं कच्चा (मट्ठा)

3 बराबर माप व लम्बाई की दो बालटियाँ हैं। एक बालटी में 2 इंच का एक छेद है और दूसरी बालटी में 1-1 इंच के दो छेद हैं। दोनों में से कौन-सी बालटी पहले खाली होगी?

एक मुट्ठी राई,
जगह-जगह छितराई
(तारे)

4 पन्द्रह अगस्त को कहीं चोरी हुई। पुलिस को तीन लोगों पर सन्देह था समीर, जसमीत और सैम पर। समीर ने बताया कि घटना के वक्त वह किचन में चाय बना रहा था। जसमीत ने कहा उस समय वह घर का टैक्स जमा करने नगर निगम के ऑफिस गई थी। सैम ने बताया कि वो अपने दाँत का इलाज कराने अस्पताल गया था। तुम्हें क्या लगता है अपराधी कौन हो सकता है?

अपने शिक्षकों से कुछ बातें

खुशी

मैं जब पहली बार इस स्कूल में आई थी तो यह सोचकर डर रही थी कि पता नहीं स्कूल में शिक्षक कैसे होंगे। मैं पाँचवीं कक्षा में यहाँ आई थी। मेरे मन में अपने शिक्षकों से कुछ सवाल हैं...

चित्रः ओजस सिन्हा, नवीं, डीपीएस, पटना

जैन सर। सर, मुझे आपका पढ़ाया हुआ बिलकुल समझ में नहीं आता है। मुझे और हमारी कक्षा के ज़्यादातर बच्चों को अँग्रेज़ी में बहुत समस्या आती है और आप गणित को अँग्रेज़ी में समझाते हो।

सर, जिस तरह से आप बच्चों का मज़ाक उड़ाते हैं और उनकी बात अनसुनी करते हैं वो मुझे ठीक नहीं लगता। जब गणेश क्लास में नया-नया आया था तो पहले तो आपने प्यार से उसका नाम पूछा। फिर आपने पूछा कि तुम्हारे पापा क्या करते हैं? उसने कहा कि मेरे पापा गाँव में सरपंच हैं तो आपने उसका मज़ाक उड़ाया। उससे नए जूते आने की बात कहते हुए कहा कि तुम्हारी हैसियत तो है ना जूते खरीदने की! आपको देखकर बहुत से बच्चे भी हँस रहे थे। सिर्फ उनको छोड़कर जो समझते हैं कि गणेश का इस तरह से मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए। वो शर्मिंदगी महसूस कर रहा था और मुँह नीचे करके खड़ा था।

शर्मा सर। सर, मुझे आपसे शिकायत है कि आप बच्चे को बहुत मारते हो। आपसे बच्चे म्यूज़िक सीखने आते हैं और आप इन छोटे-छोटे बच्चों को उठा-उठाकर गिरा देते हो। अगर उन्हें पानी पीने जाना होता है तो आप उन्हें चाँटा मारकर बैठा देते हो। अगर उन्हें प्रार्थना याद नहीं होती है तो इसमें उनकी क्या गलती है! एक दिन एक बच्चे की शर्ट बाहर निकल रही थी तो आपने उसे प्रेयर में सबके सामने डाँट दिया और वो रोने लगा। कोई भी टीचर उसे चुप कराने नहीं आया सिर्फ पीटीआई सर ने चुप करवाया और उसकी शर्ट अन्दर की। आप बच्चों को मारते हो तो हमारी क्लास की कुछ लड़कियों के आँसू ही आ जाते हैं।

मनीष सर। आपने हमें एक फाइल बनाने को दी थी जिसमें पूरे राज्यों के मैप बनाने थे। उनके ज़िलों के नाम, साक्षरता, जनसंख्या और राजधानी लिखनी थी। जो बच्चे काम नहीं कर पाए थे आपने उन्हें मारा और कहा कि कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी रहती है।

लाल जी सर, आपको लगता है कि आपसे अच्छी चित्रकारी कोई नहीं कर सकता। मैंने एक चिड़िया का चित्र बनाया। जब मैं वो चित्र आपको देने के लिए गई तो आपको लगा कि वो चित्र मैंने नहीं बनाया। आपने कहा कि तू अगर इस चित्र को मेरे सामने बनाए तो मानूँ। ....मुझे बहुत तेज़ गुस्सा आया। मैं वहाँ से चली गई और मैंने उस चित्र को फाड़कर फेंक दिया।

गौर सर। मुझे अभी भी याद है कि जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी तब आपने मुझे बहुत ज़ोर से मारा था। मेरे पीछे जो लड़की बैठी थी उसने कागज़ का पंखा बनाकर मेरी टेबिल पर फेंक दिया था। मैंने उठाया तो आपने मुझे देख लिया, दो-चार बातें सुनाईं और चाँटा मारा। जब मैंने आपसे कहा कि यह मेरा नहीं है तो आपने मुझे फिर चाँटा मार दिया।

सर मुझे अभी भी याद है आपने सातवीं कक्षा में मुझे "आया" कहा था। जब भावना मैम की बेटी मेरे साथ रहती थी तो आपको लगता था कि मैं पढ़ती नहीं हूँ। सिर्फ झील के साथ खेलती हूँ। एक दिन मेरा होमवर्क पूरा नहीं था तो आपने कहा कि यह बड़ी होकर बस "आया" बनेगी और बच्चों को सम्हालेगी। उस वक्त मुझे बहुत तेज़ रोना आ रहा था लेकिन आपके डर से मैं रोई भी नहीं।

खुशी, आठवीं, सवाई माधोपुर, राजस्थान

(बस शिक्षकों के नाम बदले हुए हैं...)

कहानी कैसे बनती है?

स्वयं प्रकाश

लोग अकसर मुझसे पूछते हैं कि साधारण-सी दिखाई देनेवाली घटनाओं से आप कहानी कैसे बना लेते हैं। मैं उनसे यही कहता हूँ कि दुनिया में साधारण कुछ नहीं होता। ध्यान से देखा जाए तो हर साधारण में कुछ न कुछ असाधारण छिपा होता है। वह हर समय प्रकट नहीं होता। वह मौका आने पर, परिस्थिति बनने पर अचानक प्रकट होता है और देखनेवाले चौंक जाते हैं कि अरे! हम तो इसे ऐसा समझते थे। लेकिन यह तो ऐसा निकला। या हमें तो पता नहीं था कि यह ऐसा है। कहानीकार के रूप में जो मुझे जँच जाता है उस पर मैं बगुले की तरह घात लगाए बैठा रहता हूँ और जैसे ही वह असाधारणता प्रकट होती है उसे पकड़ लेता हूँ और उसकी कहानी बना देता हूँ। इसके लिए बहुत धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। घण्टों और हफ्तों ही नहीं, कई बार महीनों या वर्षों तक भी। और फिर भी सम्भव है कि अन्त में जाकर कुछ न बन पाए।

मेरी बहन की नवजात बच्ची बीमार थी। वह जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल के न्यूरो सर्जरी वार्ड में भर्ती थी। न माँ का दूध पी पाती थी और न कोई और। डॉक्टर ने कहा कि इसे बकरी का दूध पिलाइए। अब उस अनजान शहर में हम बकरी का दूध कहाँ से लाएँ?

पास के पलंग पर एक बेहद बूढ़ी महिला भर्ती थी। वह सरदार थीं। महिला का बेटा रोज़ सुबह उनके लिए दूध वगैरह लेकर आता था। महिला के पति ने कहा, "फिकर न करो। हमारे घर गाय हैं, भैंस हैं, एक बकरी भी है। मेरा लड़का दूध लाता ही है अपनी माँ के लिए रोज़ सवेरे, तुम्हारी बच्ची के लिए भी बकरी का दूध ले आएगा।"

दूसरे दिन से बकरी का दूध आने लगा।

चार रोज़ बाद वह महिला डिस्चार्ज होकर घर चली गई।

लेकिन उनका लड़का रोज़ सवेरे बकरी का दूध लाता रहा और जब तक वह बच्ची अस्पताल में रही वह बिना नागा बकरी का दूध लाता रहा।

बाद में पता चला कि डिस्चार्ज होने के दूसरे दिन ही वह बूढ़ी महिला चल बसी थी।

लेकिन दूध तो दूसरे दिन भी आया था!

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि घर में माँ की लाश पड़ी है और बेटे से कहा जा रहा है कि जाओ पहले अस्पताल जाकर उस बच्ची को दूध दे आओ।

ऐसे लोगों की कहानियाँ मैं नहीं लिखूँगा तो और कौन लिखेगा!

मुझे लगता है हमेशा अभावों का रोना रोते रहने से, व्यवस्था की खामियाँ गिनाते रहने से और शिकायतें करते रहने से कोई बड़ी रचना नहीं बनती। एक कहावत है कि यदि तुम्हारे पास कोई समाधान नहीं है तो तुम समस्या का ही एक अंग हो।

चित्रः विष्णु चिंचालकर

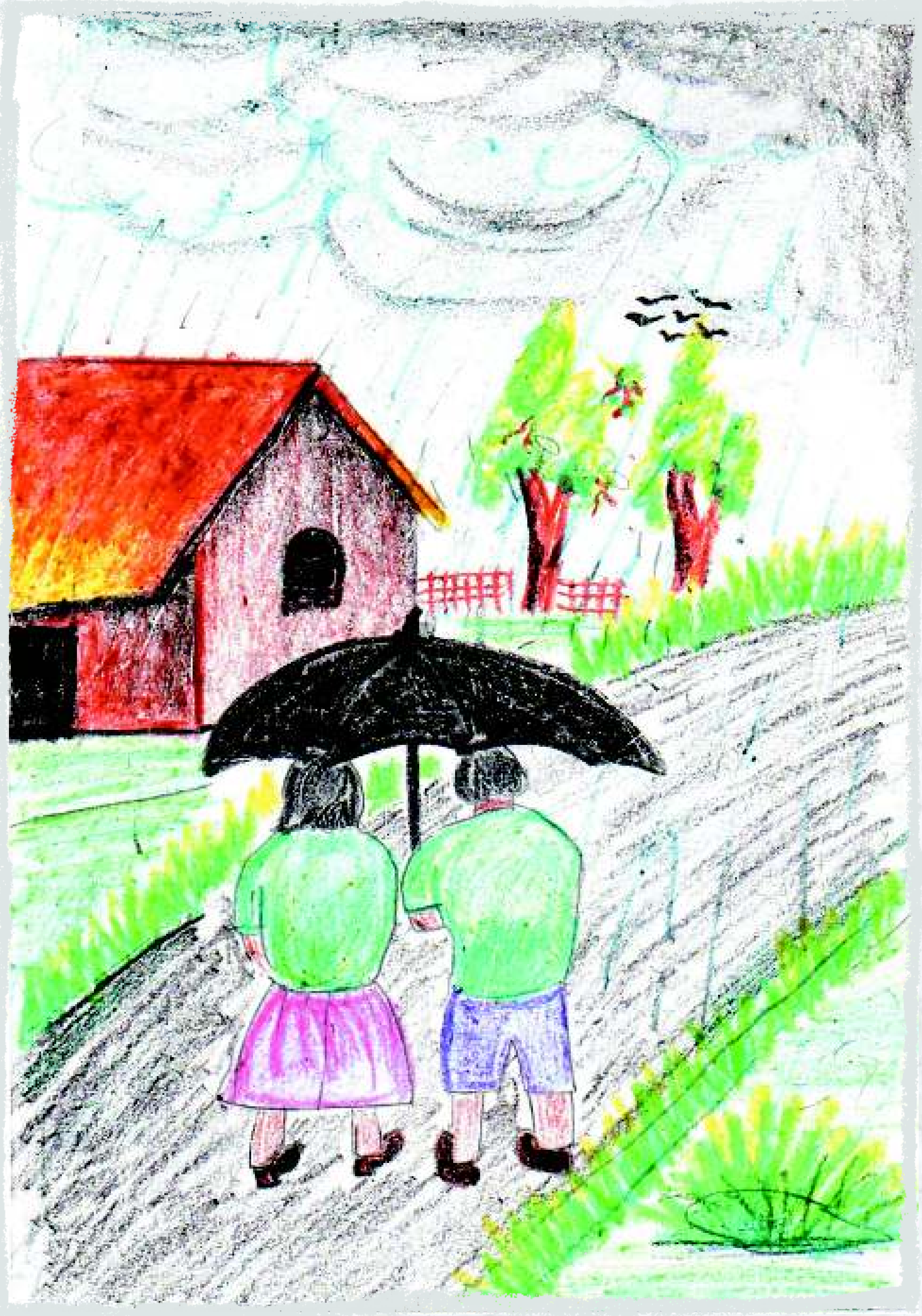

भगवान ऊपर है!

लोग कहते हैं कि भगवान ऊपर हैं। तो कुछ लोग कहते हैं कि भगवान स्वर्ग में रहते हैं। अब आप ही मुझे बताइए कि भगवान कहाँ रहते हैं? कौन इसका जबाव देगा? हम जब गणेश भगवान की पूजा करते हैं तब हम ऐसा कहते हैं कि गणेश भगवान आप आज से इस मूर्ति में आकर रहिए। ऐसा क्यों कहते हैं? मैंने ये सवाल माँ से पूछे तो हम दोनों ने बहुत बातें की। उससे मुझे कुछ बातें समझ में आईं। कि भगवान हमारे अन्दर रहते हैं। हम उन्हें कभी देख नहीं सकते इसलिए हम मूर्ति की पूजा करते हैं। और एक बात जब हम खुश होते हैं और हँसते हैं तब हमारे अन्दर रहनेवाले जो भगवान हैं वे जागते रहते हैं। अगर कोई रोता हो या गुस्से में हो तो उसके अन्दर का भगवान सोता है।

–सई मिलिन्द थत्ते, दूसरी, पाटीलपारा, पालघर, महाराष्ट्र

– कुलदीप, पाँचवीं, कर्त्तव्य, नोएडा, उ. प्र.

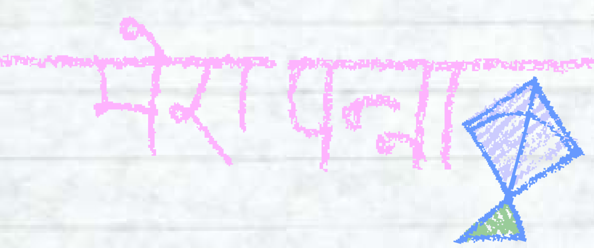

गाँव में आया तूफान

हमारे गाँव में पीपल की डाल हवा के कारण गिर गई थी और उसमें 4 चिड़िया गिर गई थीं। मैंने उन्हें उठा लिया। दो चिड़ियाँ तो मर गई थीं और दो चिड़ियाँ ज़िन्दा थीं। पर वह दोनों चिड़ियाँ काँप रही थीं। तो मैंने दोनों चिड़ियों के लिए घर बनाया। फिर थोड़ी देर बाद दोनों चिड़ियों ने काँपना बन्द कर दिया।

–पायल सिन्हा, पाँचवीं, अज़ीमप्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

पापा जब बच्चे थे...

पापा जब बच्चे थे तब वे गाँव में रहते थे। वहाँ शिक्षा के ज़्यादा साधन नहीं थे। जब पापा पाँचवीं में थे तब जनगणना हो रही थी। पापा पढ़ने में तेज़ थे इसलिए उनको तब पहली से पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाना पड़ता था। क्योंकि तब पहली से पाँचवीं कक्षा तक का एक ही शिक्षक होता था। और उसकी ड्यूटी जनगणना में लग गई थी। इस मौके का फायदा पापा भरपूर उठाते। कभी वे बच्चों के पीछे डण्डा लेकर दौड़ते थे तो कभी किसी को डाँटा करते थे। उन्हें 5 किलोमीटर दूर एक कस्बे में पढ़ने जाना पड़ता था। पैदल। जब वे वहाँ से घर लौटते थे तब वे थोड़ी शरारत कर लिया करते थे। वे घर लौटनेवाली गायों को रोककर उनका दूध एक लोटे में भरकर पीने लगते थे। एक बार 8-9 साल की उम्र में पापा का एक्सीडेंट हो गया। वे साइकिल से पास के गाँव में जा रहे थे तो एक ट्रक उनकी साइकिल के ऊपर से गुज़र गया। लेकिन उन्होंने कभी दादाजी को नहीं बताया। आज भी पापा अपनी बातें किसी को नहीं बताते।

–ओम माकोड़े, आठवीं, देवास, म. प्र.

हम इस गाँव के
छोटे-छोटे बच्चे हैं
इन बच्चों का प्रेम
कौन नाप सकता है
इसके पर्वत, इसकी नदियाँ
इस पर्वत को देखने से
मुझे माँ दिखाई देती है
जैसे वो मुझे अपनी
गोद में ले रही है
उसके लिए कोई
ना अपना है ना पराया
इस गाँव की स्मृतियाँ
मेरे मन में रहेंगी सदा

–सौगत कुमार राउत, छठी, भुवनेश्वर, उड़ीसा

–शिवराज, मुस्कान संस्था, भोपाल, म. प्र.

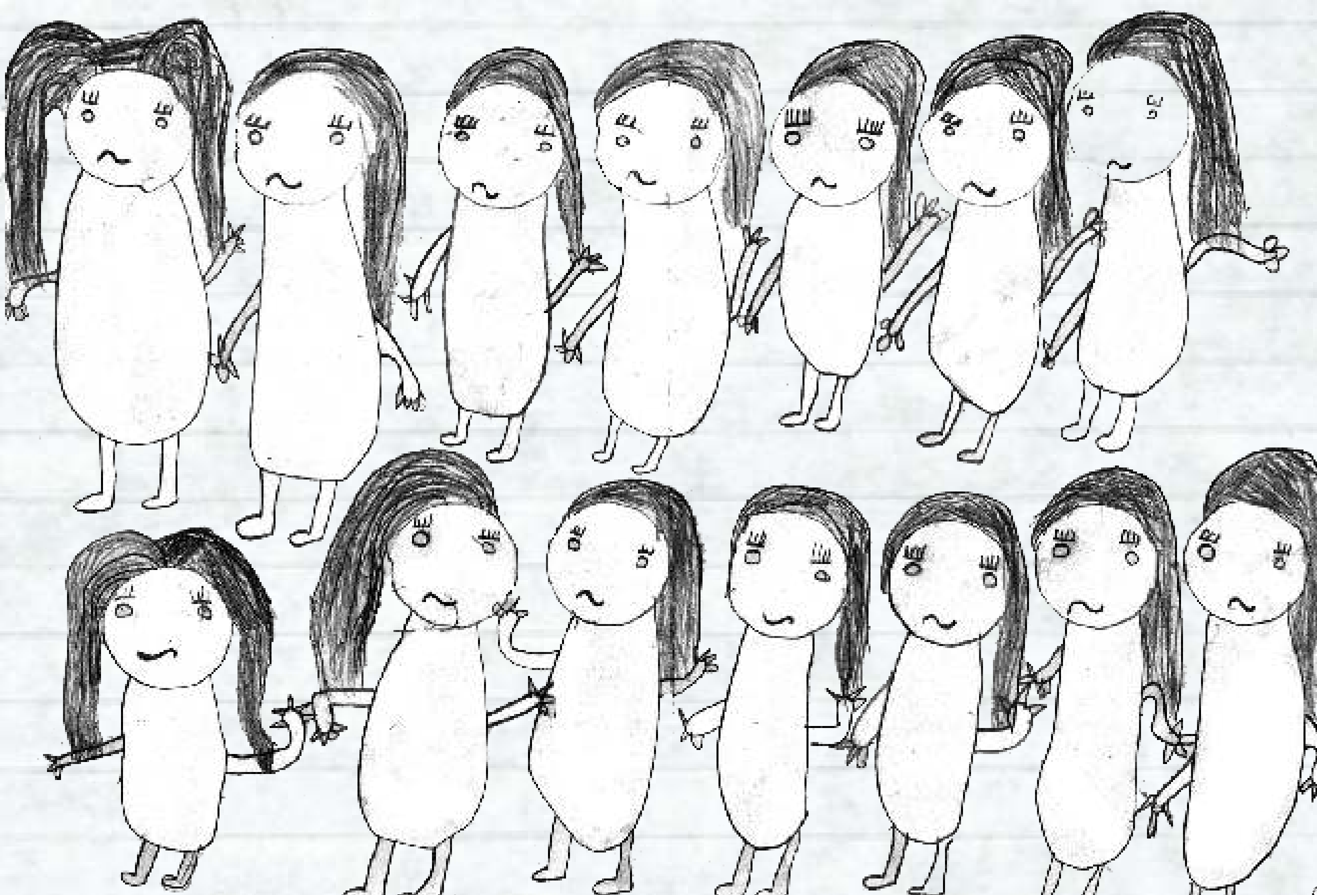

वो भूरी काली चिड़िया

उमेश चौहान

फोटो - पी एम लाड

मेरे घर के आसपास बहुत सारे पेड़ हैं। इन पर किस्म-किस्म के पक्षी रहते हैं। अमूमन हलकी-सी रोशनी के साथ ही इनका चहचहाना शुरू हो जाता। पर एक चिड़िया है जो रात का अँधेरा अभी छँटा भी नहीं होता कि चहचहाने लगती है। कम ही पक्षी ऐसा करते हैं। सुबह साढ़े चार बजे से ही उसकी पैनी ट्यूं, ट्यूं, टि टीं ट्यूं सुनाई देने लगती है। इस आवाज़ को मैं बरसों से सुनता आ रहा हूँ। इस बार मैंने इस पर ध्यान दिया। ये है भूरी काली चिड़िया (ब्राउन रॉक चैट)।

मार्च का महीना था। कुछ दिनों से भूरी-काली चिड़िया का एक जोड़ा मेरे घर के आसपास मँडरा रहा था। कभी वो तार पर बैठे दिखते, कभी खिड़की पर तो कभी बाथरूम, आँगन या गैलरी में। इन्हीं दिनों हमारा एक किराएदार घर खाली करके गया था। मैं सफाई कर रहा था कि वो जोड़ा वहाँ आया। वो रसोई, सोने के कमरे और बैठक सभी जगह घूमे। अन्त में उन्होंने बैडरूम को चुना। उसमें रोशनदान था शायद इसलिए। उन्होंने रोशनदान की जाली से कई बार निकलकर देखा। यहाँ से वे बेरोक-टोक आ-जा सकती थीं। कमरा तय होने के बाद उन्होंने कमरे में अलग-अलग कई जगह बैठ-बैठकर देखा। पहले अलमारी पर बैठकर ट्यूं ट्यूं (नहीं, नहीं!) किया। वहाँ ढलान ज़्यादा थी शायद इसलिए। फिर पत्थर की बनी अलमारी के ऊपरवाले खाने को चुना जो सुरक्षित था लेकिन यहाँ भी हलकी ढलान थी। उस खाने के किनारे बैठकर उन्होंने कई बार ट्यूं, ट्यूं, टि टीं ट्यूं टिक टिक किया। शायद कह रहे हों ढलान तो इसमें भी है। अण्डे दिए तो लुढ़क जाएँगे। फिर एक चिड़िया उड़कर छत से मटके के एक टुकड़े को चोंच में दबाकर ले आई। और उसे अलमारी के खाने की ढलान की ओर रखा। यह एक संकेत था कि ऐसे पत्थर लाकर बाँध बनाया जा सकता है। दोनों के बीच फैसला हुआ। फिर क्या था! दोनों ने बारी-बारी से ईंट, मटके, गिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े इस तरह जमाकर रखे कि बीच में गड्ढा बना रहे। ऐसे कम से कम सौ टुकड़े जमा किए गए।

घोंसला बन जाने के बाद अब उसे सजाने-सँवारने का काम था। सो उन्होंने पत्तियों को चीरकर उनके रेशे निकाले। फिर नरम पत्तियाँ और तिनके जमाकर गद्देदार घोंसला बना लिया। देखने में बड़ा नरम-मुलायम लग रहा था वो। 20 मार्च तक उनका घोंसला तैयार हो चुका था। 22 मार्च की सुबह 11 बजे मैंने घोंसले में हलके नीले रंग के तीन अण्डे देखे। आमतौर पर गौरैया, कबूतर, कौआ आदि दो अण्डे देते हैं। मैं उन्हें दूर से रोज़ देखता। कई बार चिड़िया अपने शरीर की गर्मी से अण्डों को ऊष्मा पहुँचा रही होती।

एक दिन मैंने उनकी ट्यूं, ट्यूं, ट्यूं, ट्यूं की तेज़ आवाज़ें सुनीं। वे बेचैन भी नज़र आ रही थीं। मैं जानता था कि पक्षी अकसर साँप, नेवला, बिल्ली आदि को घोंसले के आसपास आता देख ऐसी आवाज़ें करते हैं। मेरा अनुमान सही निकला। एक बिल्ली उनके घोंसले पर छलाँग लगाने के लिए तैयार बैठी थी। मैंने झट-से उस बिल्ली को भगाया और परिवार के लोगों को सावधान किया कि घर के दरवाज़े-खिड़कियाँ खुले न छोड़ें।

मैं रोज़ घोंसले को देखता। 1 अप्रैल को सुबह 7 बजे हमने वहाँ तीन नवजात चूज़ों को देखा। वे अपनी गर्दन झुकाए पड़े थे। एक-दो दिनों में ही उनकी चोंच विकसित हो गई। अब वे गर्दन सीधी कर चोंच खोलने लगे थे। आँखें बन्द थीं लेकिन उभरी हुई-सी थीं। त्वचा गुलाबी से काली होने लगी थी। चार दिन बाद उनके शरीर पर पंखों का आकार और उन पर काली धारियाँ दिखने लगी थीं। सिर एवं शरीर पर काले रोएँ उभरने लगे थे। लगभग सात दिनों बाद चोंच बड़ी और थोड़ी नुकीली हो गई और पर विकसित हो गए। आँखें कुछ-कुछ खुलने लगीं। धीरे-धीरे पूरे शरीर पर काले भूरे रोएँ आ गए थे। मैंने पहली बार पक्षियों को इस तेज़ी से विकसित होता देखा था।

अब रोज़ माँ-पिता की आहट पाते ही चूज़े चोंच खोलकर भोजन की माँग करते। चिड़ियाँ बारी-बारी से सब के मुँह में कीट डालती। चिड़ियों के उड़ते ही चूज़े एक-दूसरे से सटकर चुपचाप घोंसले में दुबके रहते। लगभग 12-13 दिनों में चूज़े पूरी तरह से विकसित हो गए थे। अपने माता-पिता की तरह रंग-रूप, आँखें, पैनी चोंच, नुकीले पंजे, काले भूरे पंख, आवाज़... सब कुछ। पंख फड़फड़ाकर वो अब बड़े हो जाने का परिचय देने लगे थे।

दोनों ही चिड़ियाँ घोंसले में नहीं रहती थीं। वो आसपास के किसी पेड़ या सुरक्षित जगह पर बैठकर रात गुज़ारती थी। सुबह होते ही उनके द्वारा चूज़ों का लालन-पालन शुरू हो जाता था।

15 अप्रैल को मैंने देखा कि पूरा परिवार घोंसले के बाहर था। बच्चे अब दो-चार मीटर उड़कर बैठने लगे थे। बच्चों को बढ़ता देख मैं बहुत खुश था। पर दुखी भी था कि चूज़े घोंसला खाली करके जा चुके थे। आज भी कई भूरी काली चिड़ियाँ ट्यूं, ट्यूं, टि टीं ट्यूं करती आसपास के पेड़ों पर कीड़े खाती दिख जाती हैं। उनमें से कौन हमारे मेहमान रहे थे, हम पहचान नहीं पाते हैं!

फोटो - उमेश चौहान

पहली बौछार के फूल

आमोद कारखानिस

जून के अंक में हमने एक गतिविधि सुझाई थी। इसमें तुम्हें अपने आसपास की सूखी पड़ी ज़मीन पर नज़र रखनी थी। देखना था कि बारिश की पहली कुछ बौछारों के बाद वहाँ कौन-से फूल खिले हैं। उन फूलों के रंग, आकार, पँखुड़ियों की संख्या आदि। हमें तुम्हारे ढेरों सुन्दर-सुन्दर खत मिले। इनमें पहली बारिश के खूबसूरत अनुभव तो थे पर बारिश के बाद खिले फूलों के बारे में कम ही था। और कई में बारहमासी का ज़िक्र था।

असल में बारहमासी खिलने के भी पहले जो घास उग आई थी उसमें कई छोटे-छोटे फूल होते हैं। इनमें से एक है ग्राउंड स्टार लिली या काली मूसली (चित्र 1)। यह भारत में हर जगह पाई जाती है। इसका खूबसूरत फूल बहुत छोटा होता है। ध्यान से न देखा जाए तो यह नज़र से छूट सकता है। खैर, आज मैं एक ऐसे फूल के बारे में बताना चाहूँगा जो पहली फुहार के लगभग 48 घण्टों में उग आता है (चित्र 2)। इसका नाम है *Pancratium Parvum*। बम्बई के संजय गाँधी नेशनल पार्क के जंगल में इसे देखा जा सकता है। यह सिर्फ पश्चिमी घाट के कुछ हिस्सों में ही पाया जाता है। वैसे इससे मिलता-जुलता *Pancratium* मध्य भारत में भी दिखता है पर उसके फूल थोड़ी बाद में आते हैं। दक्खन के पठार और मध्य भारत में बारिश के साथ तुरन्त फूलनेवाला पौधा है रेन लिली (चित्र 3)। बारिश होते ही इसके पीले-पीले फूल ज़मीन पर दिखना शुरू हो जाते हैं। इसमें भी फूल पहले आते हैं और पत्तियाँ बाद में। एक खास पतंगे की इल्ली इसकी पत्तियों पर पाई जाती है। महीने भर में इनके काले-नारंगी लार्वा दिखाई देने लगते हैं (चित्र 4)।

फोटो 1, 2- आमोद कारखानिस

चित्र 1 - काली मूसली

चित्र 2- *Pancratium Parvum*

चित्र 3 - रेन लिली

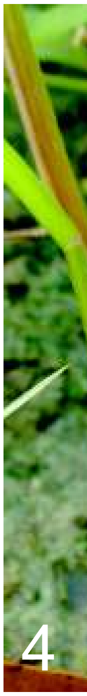

ये सभी बहुत छोटे पौधे हैं। बड़े पेड़ों की तरह इनकी जड़ें ज़मीन में बहुत नीचे तक नहीं जा सकती हैं। इन्हें अपना पूरा जीवन-चक्र बारिश का पानी रहते-रहते तक पूरा करना होता है। इनके कन्द ज़मीन में गड़े रहते हैं। बारिश होते ही इनमें प्रायः फूल पहले आते हैं (पत्तियों से भी पहले) – उनका परागण होकर बीज बनते हैं, बिखरते हैं। कई पौधे उसी मानसून में उग आते हैं। उनमें पत्तियाँ आती हैं जिनसे ये भोजन बनाते हैं। और उसे कन्द के रूप में जमा करते हैं। इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि अगली बारिश में भी यह जीवन चक्र दुबारा शुरू होगा...

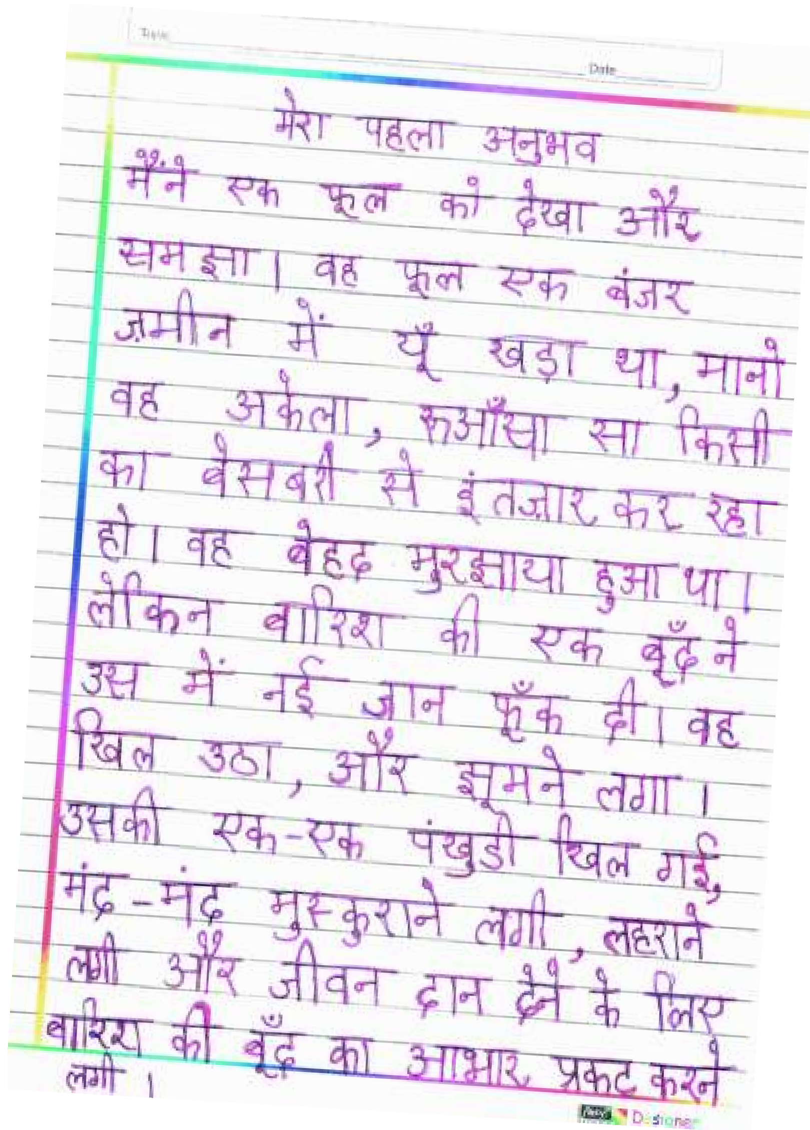

मेरा पहला अनुभव

मैंने एक फूल को देखा और समझा। वह फूल एक बंजर ज़मीन में यूँ खड़ा था, मानो वह अकेला, रुआँसा सा किसी का बेसबरी से इंतज़ार कर रहा हो। वह बेहद मुरझाया हुआ था। लेकिन बारिश की एक बूँद ने उस में नई जान फूँक दी। वह खिल उठा, और झूमने लगा। उसकी एक-एक पंखुडी खिल गई, मंद-मंद मुस्कुराने लगी, लहराने लगी और जीवन दान देने के लिए बारिश की बूँद का आभार प्रकट करने लगी।

फोटो 3, 4 - किशोर पँवार

चित्र 4

रेन लिली और उसका पतंगा - एक दूजे के लिए

बारिश की पहली फुहारों से जागने वाली कई लिली हैं। इनमें से एक है जंगली स्पाइडर लिली *(Pancratium Longiflorum)*। जिसका ज़िक्र इस लेख में आया है। यह किसी खास जगह पर ही उगती है इसलिए इसके खत्म होने का खतरा ज़्यादा होता है। इसके फूल की सुन्दरता में चार चाँद लगाता है इसका बड़ा-सा सफेद स्कर्ट। यह स्कर्ट पुंकेसरों का एक हिस्सा है। इसे फूलों का करोना भी कहते हैं। पुंकेसर इसकी बाहरी झालर से ही बाहर निकलते हैं - लम्बे-लम्बे - मकड़ियों की पतली टाँगों जैसे। शायद तभी इसे स्पाइडर लिली कहते हैं। पीली रेन लिली की एक और खासियत है इसका एक साथ हज़ारों की संख्या में खिल जाना। इनकी उम्र बहुत कम होती है। ये तुरन्त फूल कर फल बनाते हैं। फलों में सैकड़ों छोटे चमकदार बीज आते हैं। इसी लिली के साथ एक पतंगा भी आता है। दोनों साथ-साथ आते हैं और साथ-साथ ही चले जाते हैं।

- किशोर पँवार

आरे बादल!
सितम्बर माह की गतिविधि

जुलाई अगस्त की लगातार बारिश के बाद सितम्बर माह तक बारिश कम होने लगती है। आसमान में बादल तो होते हैं पर उनका घना जमावड़ा नहीं होता। यही समय है आकाश में बादलों के खूबसूरत नज़ारे देखने का। सुबह शाम तो लाल पीले रंगों के साथ इनकी खूबसूरती और भी बढ़ जाती है।

तो इस बार बादलों के चित्र बनाते हैं।

दिन के किसी समय जब बिखरे-बिखरे बादल हों तो आसमान के किसी एक कोने का चित्र अपनी कॉपी में बना लो। उसमें से किसी एक बादल को चुनो और अपने चित्र में उस पर लाल रंग का एक गोला बना लो। अपने इस बादल का आकार और स्थान ठीक से देख लो। अब आसमान में अपने वाले बादल को ढूँढ लो और ठीक से नोट कर लो।

पाँच-दस मिनट बाद फिर से आसमान को देखो और उसमें अपना बादल ढूँढो। तुम्हें जो चीज़ें देखनी हैं वो हैं –

1. क्या तुम्हारे बादल का आकार बदल गया? अगर हाँ तो नए आकार का भी चित्र बनाओ।

2. क्या उस बादल की जगह बदल गई है? पहले स्थान से वह कितनी दूर गया है? इससे क्या तुम अन्दाज़ लगा सकते हो कि ऊपर हवा किस दिशा में बह रही है?

3. अन्दाज़ा लगाओ कि तुम्हारा बादल कितना बड़ा होगा अन्दाज़ा लगाओ।

दोनों चित्रों (पहले और दस मिनट बाद वाले) सहित अपने अनुभव **15 सितम्बर** तक हमें ज़रूर भेज देना।

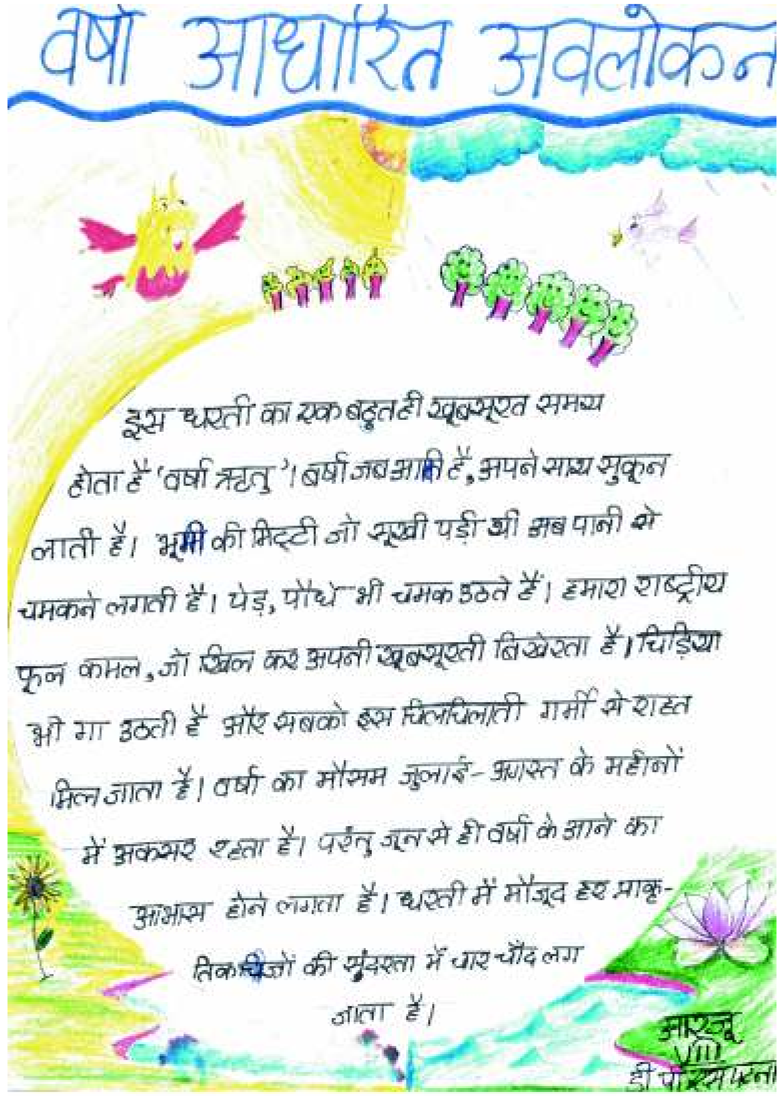

आरज़ू, आठवीं, डीपीएस पटना

फनी पाठशाला

इरफान

प्यारे दोस्तो,

यह महीना इस लिहाज़ से खास है कि इस महीने टीचर्स डे आता है। टीचर और स्टूडेंट का रिश्ता भी खास ही है। क्लास में कितने ऐसे वाकए होते हैं जब हमारी हँसी छूट जाती है। जैसे इस कार्टून में है।

ऐसे ही किसी मौके का चित्र तुम हमें भेज सकते हो। और याद रहे अक्टूबर में गाँधी जयंती भी तो है। उस पर भी तुम आज के माहौल और गाँधी जी पर कोई धड़धड़ाता कार्टून भेज दीजिए। और खूब मज़े करो।

सुहानी डोगरा, सातवीं

सिद्धेश व्यास, छठी

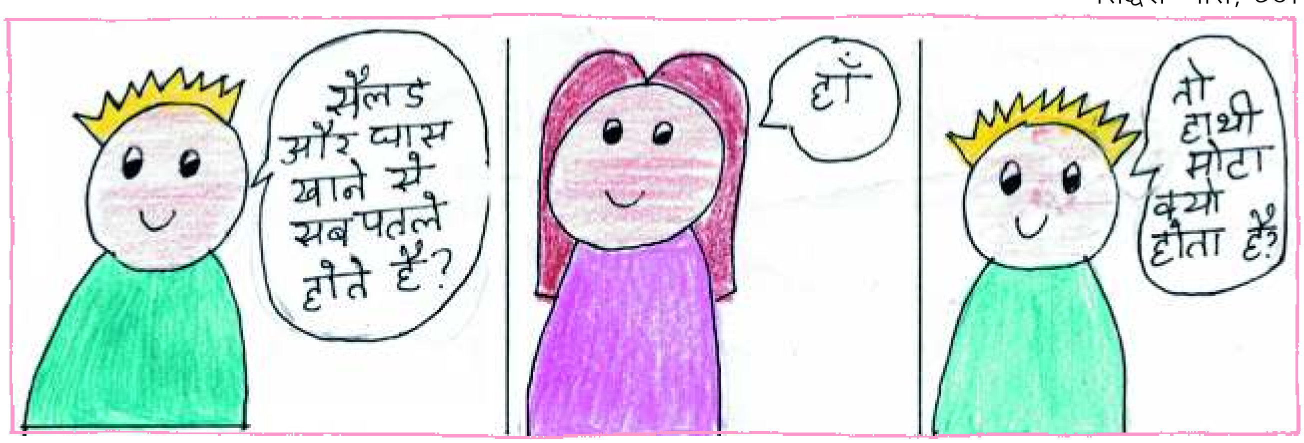

हिमांशी बजाज, सातवीं

तीनों कार्टूनिस्ट डीपीएस पुणे के हैं।

चार कौए उर्फ चार हौए

भवानीप्रसाद मिश्र

बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले
उन्होंने यह तय किया कि सारे उड़नेवाले
उनके ढंग से उड़ें, रुकें, खाएँ और गायें
वे जिसको त्योहार कहें सब उसे मनाएँ।

कभी-कभी जादू हो जाता है दुनिया में
दुनिया भर के गुण दिखते हैं औगुनिया में
ये औगुनिए चार बड़े सरताज हो गए
इनके नौकर चील, गरूड़ और बाज हो गए।

हंस मोर चातक गौरैये किस गिनती में
हाथ बाँधकर खड़े हो गए सब विनती में
हुक्म हुआ, चातक पंछी रट नहीं लगाएँ
पिऊ-पिऊ को छोड़ें कौए-कौए गायें।

बीस तरह के काम दे दिए गौरैयों को
खाना-पीना मौज उड़ाना छुटभैयों को
कौओं की ऐसी बन आई पाँचों घी में
बड़े-बड़े मनसूबे आए उनके जी में

उड़ने तक के नियम बदलकर ऐसे ढाले
उड़नेवाले सिर्फ रह गए बैठे ठाले।

आगे क्या कुछ हुआ सुनाना बहुत कठिन है
यह दिन कवि का नहीं चार कौओं का दिन है
उत्सुकता जग जाए तो मेरे घर आ जाना
लम्बा किस्सा थोड़े में किस तरह सुनाना।

चित्रः शशि शेट्ये

राजा ने आदेश दिया

देवी प्रसाद मिश्र

राजा ने आदेश दिया : बोलना बन्द
क्योंकि लोग बोलते हैं तो राजा के विरुद्ध बोलते हैं

राजा ने आदेश दिया : लिखना बन्द
क्योंकि लोग लिखते हैं तो राजा के विरुद्ध लिखते हैं

राजा ने आदेश दिया : चलना बन्द
क्योंकि लोग चलते हैं तो राजा के विरुद्ध चलते हैं

राजा ने आदेश दिया : हँसना बन्द
क्योंकि लोग हँसते हैं तो राजा के विरुद्ध हँसते हैं

राजा ने आदेश दिया : होना बन्द
क्योंकि लोग होते हैं तो राजा के विरुद्ध होते हैं

इस तरह राजा के आदेशों ने लोगों को
उनकी छोटी-छोटी क्रियाओं का महत्व बताया

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / भोपाल/ 261 /2015-17

चित्र पहेली

- बाएँ से दाएँ
▪ ऊपर से नीचे

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रेक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: सुशील शुक्ल